

वार्षिक प्रतिवेदन

2023-24



राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी
नई दिल्ली

वार्षिक प्रतिवेदन

2023-24



राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी
एनएएससी, देवप्रकाश शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली – 110 012, भारत

जून 2024

आमुख

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (रा.कृ.वि.अ.) कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार से संबंधित मुद्दों पर नीति निर्माताओं और विभिन्न हितधारकों का मार्गदर्शन वर्ष 1990 से करती आ रही है। यह जानकर खुशी हुई कि अकादमी ने 2023–24 के दौरान विचार–विमर्श सत्र (7), विशेषज्ञ परामर्श (4) और उभरते मुद्दों पर कार्यनीतिप्रक कार्यशालाएं (2) आयोजित की हैं। अकादमी ने अमृत काल 2047 के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के लिए भावी दिशा' और 'कृषि में उभरती हुई चुनौतियों से निपटने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सशक्तीकरण पर ब्लू प्रिंट तैयार करने के लिए पैनल चर्चा भी आयोजित की, ताकि वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में देश उभरती हुई चुनौतियों से निपट सके। यह वह वर्ष होगा जब भारत अपनी 'स्वतंत्रता की शताब्दी' मनायेगा। वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय श्रीअन्न वर्ष के रूप में मनाने के लिए, अकादमी ने विश्व खाद्य पुरस्कार फाउंडेशन के सहयोग से खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए श्री अन्नों पर एक वर्चुअल कार्यशाला आयोजित की और "टिकाऊ कृषि के लिए श्री अन्न को बढ़ावा देने हेतु भावी दिशा तैयार करने" पर एक राष्ट्रीय संवाद का आयोजन किया। कृषि अनुसंधान और विकास के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक उद्योग / निवेशक बैठक भी आयोजित की गई।



अकादमी द्वारा की गई नई पहलों में शिक्षा के बदलते स्वरूप में शिक्षकों की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षाशास्त्र विकास कार्यक्रम शामिल है और इससे भा.कृ.अ.प. के 300 से अधिक वैज्ञानिक लाभान्वित हुए हैं। एक अन्य पहल के अन्तर्गत रा.कृ.वि.अ. की गतिविधियों में पीएएस को और अधिक शामिल करने के लिए और सोसायटी पत्रिकाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए कृषि समितियों के व्यावसायिक संघ के साथ बैठक आयोजित है। इसके अलावा, रा.कृ.वि.अ. की गतिविधियों में उनकी बेहतर भागीदारी के लिए रा.कृ.वि.अ. के विदेशी और प्रवासी अध्येताओं के साथ दो वर्चुअल बैठकें आयोजित की गई। अकादमी ने निर्णय लिया है कि प्रत्येक वर्ष एक सामान्य मुख्य उद्देश्य का आयोजन किया जाएगा तथा इसे रा.कृ.वि.अ. और कृषि समितियों के व्यावसायिक संघ द्वारा बढ़ावा दिया जाएगा। इसी प्रकार की गतिविधियां पूरे वर्ष आयोजित की जाएंगी तथा वर्ष के अंत में एक सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। वर्तमान वर्ष को 'डिजिटल कृषि 2024' वर्ष के रूप में पहचान की गई है।

अकादमी द्वारा कृषि के क्षेत्र में आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों से निपटने के लिए टिकाऊ विकास के लक्ष्य हेतु कृषि खाद्य प्रणालियों के रूपांतरण विषय पर कोच्चि, केरल में 16वीं कृषि विज्ञान

कांग्रेस (एएससी) का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। मैं विचार—मंथन सत्रों सहित विभिन्न गतिविधियां चलाने के लिए क्षेत्रीय चैप्टर के संयोजकों की सराहना करता हूँ और साथ ही कृषि विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर स्कूली छात्रों को जानकारी प्रदान करने के अलावा विश्व मृदा दिवस और विश्व दुग्ध दिवस के आयोजन पर भी संयोजकों की सराहना करता हूँ। मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि अकादमी ने भारत के विज्ञान अकादमियों के साथ—साथ अन्य देशों की अकादमियों के साथ संबंध स्थापित करने की पहल की है। रा.कृ.वि.अ. संवादपत्र, नीति पत्रों, वार्षिक प्रतिवेदन और रा.कृ.वि.अ. वार्षिक योजनाकार का समय पर प्रकाशन की भी सराहना की जानी चाहिए। मुझे यह घोषित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अकादमी के शासकीय जर्नल 'एग्रीकल्चरल रिसर्च' को अंतरराष्ट्रीय रेटिंग प्राप्त हो गई है। अकादमी द्वारा 'स्टेट ऑफ इंडियन एग्रीकल्चर' और 'ट्रांसफर्मेशन ऑफ एग्री एंड फूड सिस्टम्स' का भी प्रकाशन किया गया है।

मैं तत्काल पूर्व अध्यक्ष डॉ. टी. महापात्र तथा सभी निवर्तमान और वर्तमान पदाधिकारियों और कार्यकारी समिति के सदस्यों को उनके मार्गदर्शन और योगदान के लिए अपना आभार व्यक्त करता हूँ। इसके साथ ही मैं अकादमी की सभी गतिविधियों में सहायता पहुँचाने और उन्हें सम्प्रण भाव से कार्यान्वित करने के लिए रा.कृ.वि.अ. सचिवालय के सभी सदस्यों की भी सराहना करता हूँ।

—कृष्ण

(हिमांशु पाठक)

अध्यक्ष

विषय-सूची

आमुख	iii
अकादमी के बारे में	1
वैज्ञानिक गतिविधियां	2
विचार—मंथन सत्र/ कार्यनीतिपरक कार्यशालाएं/ परामर्श बैठकें	2
विशेष कार्यक्रम	19
अन्य गतिविधियां	22
क्षेत्रीय चैप्टर	27
क्षेत्रीय चैप्टरों की गतिविधियाँ	32
सम्पर्क	39
राष्ट्रीय	39
अंतरराष्ट्रीय	39
संस्थागत सदस्यता	39
उत्कृष्टता को सम्मान देना	40
नई अध्येतावृत्ति	40
विदेशी अध्येता	42
प्रवासी अध्येता	42
एसोसिएटशिप	42
वर्ष 2024 के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार	43
स्थापना दिवस और महासभा की वार्षिक बैठक	44
स्थापना दिवस समारोह	44
अध्यक्षीय अभिभाषण	45
आमसभा की 30वीं वार्षिक बैठक के कार्यवृत्त के कुछ अंश	46
अध्येताओं और एसोसिएट्स का प्रवेश	47

16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस	47
प्रकाशन	50
नीति दस्तावेज (पीपी)	50
संवादपत्र	51
जर्नल (स्प्रिंगर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित)	51
पुस्तकें	51
कार्यक्रम और बैठकें	51
नववर्ष मिलन समारोह	51
क्षेत्रीय चैप्टर के संयोजकों की बैठकें	52
कार्यकारी परिषद की बैठकें	53
जर्नल स्कोर समिति	57
वर्ष 2024 के लिए नियोजित कार्यक्रम	58
वित्तीय विवरण	59
आभार ज्ञापन	59
अनुबंध	
लेखापरीक्षक रिपोर्ट	60
लेखों का लेखापरीक्षित विवरण	63
कार्यकारी परिषद	65
संक्षिप्तियों की सूची	67

अकादमी के बारे में

स्वर्गीय प्रो. बी.पी. पाल, एफआरएस की दूरदृष्टि से प्रेरित होकर कृषि तथा कृषि पर आधारित आजीविका से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों, कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने; और सुशासन के विभिन्न स्तरों पर नीति—निर्माताओं व अन्य हितधारकों को प्रमाण पर आधारित अपना योगदान देने के लिए फसल, पशुपालन, मात्स्यकी, वानिकी, अभियांत्रिकी तथा समाज—विज्ञानों सहित विभिन्न विषयों के कृषि वैज्ञानिकों को एक मंच प्रदान करने के लिए वर्ष 1990 में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी की स्थापना की गई। यह अकादमी विभिन्न मंचों पर कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार से संबंधित गतिविधियों पर अपने स्पष्ट विचार व्यक्त करने के साथ—साथ कृषि विज्ञान के क्षेत्र में समसामयिक मुद्दों पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस, सम्मेलन, सेमिनार, सिम्पोजिया, कार्यशालाएं तथा विचार—मंथन सत्र आयोजित करती है तथा उनके आयोजन में सहायता भी पहुंचाती है।

अकादमी कृषि विज्ञान के प्रति समप्रित एक ऊर्जावान राष्ट्रीय स्तर के निकाय के रूप में उभरकर सामने आई है। विज्ञान में अपने योगदानों के लिए सम्मानित अकादमी के अध्येताओं में, कृषि तथा सम्बद्ध विज्ञानों की भारतीय तथा विदेशी विशिष्ट महानुभाव शामिल हैं।

उद्देश्य

- पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ, आर्थिक दृष्टि से ऊर्जावान तथा सामाजिक स्तर पर समानता लाने वाली कृषि को बढ़ावा देना।
- वैज्ञानिकों द्वारा निष्पादित कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान को सम्मानित करना व श्रेष्ठता संबंधी सहायता प्रदान करना।
- ऐसे उदीयमान वैज्ञानिक उपलब्ध कराना जो अपने कार्य में प्रगति के लिए वांछनीय स्थितियों में कार्य करने में समर्थ हो।
- देश तथा विश्व के वैज्ञानिक समुदाय के साथ विभिन्न संस्थाओं तथा संगठनों में अनुसंधान कर्मियों के बीच सम्पर्क को बढ़ावा देना।
- किसानों को महत्व, वैज्ञानिक नीति को सबल बनाने के लिए कृषि में रूपांतरण से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों का अंतरविषयी विश्लेषण करना तथा इनसे संबंधित कार्यक्रम आयोजित करना एवं विकास के लिए कृषि अनुसंधान, विस्तार एवं शिक्षा में प्रगति हेतु दस्तावेज प्रकाशित करना।
- कृषि विज्ञानों को बढ़ावा देने के लिए धनराशि तथा बंदोबस्ती प्राप्त करना व उसका प्रबंधन करना।
- उपरोक्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिए अन्य संबंधित गतिविधियां चलाना।

अकादमी की संरचना

- महा सभा : अकादमी की महासभा में इसके सभी अध्येता शामिल हैं।
- कार्यकारी परिषद : यह नीति बनाने तथा निर्णय लेने वाला मुख्य निकाय है (परिशिष्ट 3)। अकादमी के कार्य संचालन व गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं से निपटने के लिए कार्यकारी परिषद को विभिन्न समितियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है।
- क्षेत्रीय चैप्टर : अकादमी के बारह क्षेत्रीय चैप्टर बड़ापानी, बंगलुरु, भोपाल, कोयम्बटूर, कटक, हैदराबाद, करनाल, कोलकाता, लखनऊ, लुधियाना, पुणे और वाराणसी में कार्य कर रहे हैं।

वैज्ञानिक गतिविधियां

विचार-मंथन सत्र/कार्यनीतिपरक कार्यशालाएं/परामर्श बैठकें

वर्ष के दौरान निम्नलिखित विचार-मंथन सत्र/कार्यनीतिपरक कार्यशालाएं/परामर्श बैठकें आयोजित की गईं :

क्र. सं.	शीर्षक	संयोजक / सह-संयोजक	तिथि
1.	आत्मनिर्भर भारत राष्ट्रीय स्वच्छ पादप कार्यक्रम – भारत पर विशेषज्ञ परामर्श	डॉ. वी.के. बरनवाल	03 अप्रैल 2023
2.	भारतीय मात्स्यकी क्षेत्र के लिए खाद्य सुरक्षा कार्यनीतियों पर कार्यनीतिपरक कार्यशाला	डॉ. जी. जयशेकरन	17 मई 2023
3.	भारत में सार्वजनिक/निजी साझेदारियों (पीपीपी) के माध्यम से कृषि अवसरंचना तथा कृषि व्यापार विकास को बढ़ाने पर विचार-मंथन सत्र	डॉ. च. श्रीनिवास राव	25 मई 2023
4.	जैव उद्दीपक दिशानिर्देशों पर विचार मंथन सत्र	डॉ. पी.के. चक्रबर्ती और डॉ. चिन्नूसामी	21 जुलाई 2023
5.	अनुसंधान प्रकाशन की नैतिकता और वर्तमान स्थिति पर विशेषज्ञ परामर्श	डॉ. जी. तरु शर्मा	31 अगस्त 2023
6.	पशुधन और कुकुट क्षेत्रों के हरितकरण पर विचारमंथन सत्र	डॉ. बी.एम. नवीना	01 सितम्बर 2023
7.	सीओपी 28 – भारतीय कृषि के लिए तैयारी पर विशेषज्ञ परामर्श	डॉ. पी.के. अग्रवाल	25 सितम्बर 2023

क्र. सं.	शीर्षक	संयोजक / सह-संयोजक	तिथि
8.	भारतीय कृषि में फसल सुरक्षा के लिए जैव-पीड़कनाशियों पर आधारित ds-RNA की संभावनाओं पर विचारमंथन सत्र	डॉ. बी. मंडल	26 सितम्बर 2023
9.	मधुमक्खियाँ : मधुर क्रांति की वाहक विषय पर कार्यनीतिपरक कार्यशाला	डॉ. एस.सी. दुबे	29 सितम्बर 2023
10.	कृषि तथा कृषि प्रसंस्करण में सौर ऊर्जा के अनेक उपयोगों पर विचारमंथन सत्र	डॉ. एन.एस.एल. श्रीवास्तव	05 अक्टूबर 2023
11.	मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने और सुधार पर विचार मंथन सत्र	डॉ. बी.एस. द्विवेदी	28 अक्टूबर 2023
12.	स्मार्ट पशुपालन: 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लिए संभावित नियोजन पर विचार मंथन सत्र	डॉ. वाई.एस. मलिक	22 मार्च 2024
13.	कृषि के लिए डिजिटल क्रम सूचना पर विशेषज्ञ परामर्श	प्रो. राजीव के. वार्ष्ण्य और प्रो. के.सी. बंसल	26 मार्च 2024

विचार-मंथन सत्र

‘आरतमें सार्वजनिक/निजी साझेदारियों (पीपीपी) के माध्यम से कृषि-अवसंरचना तथा कृषि व्यापार विकास को बढ़ाना’ पर विचार मंथन सत्र (बीएसएस) (डॉ. च. श्रीनिवास राव)

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 25 मई 2023 को हाइब्रिड मोड में विचारमंथन सत्र का आयोजन किया गया। इस विचारमंथन सत्र में कृषि सेवाओं के प्रदानीकरण, अनुसंधान और विकास में सार्वजनिक/निजी साझेदारी को किस प्रकार विकसित किया जाये, कृषि अवसंरचना, कृषि व्यापार विकास और अनुसंधान में सार्वजनिक निजी साझेदारी की क्या संभावना है और किस प्रकार की नीतिगत सहायता की आवश्यकता है, इस पर विचार किया गया।



चर्चा के परिणाम इस प्रकार थे:

- **प्रभावी उत्पाद की शुरूआत:** विकास में तेजी लाने तथा कठोर अनुपालन उपायों के साथ उन्हें बाजार में उतारने के लिए कृषि उत्पादों की स्वीकृति प्रक्रिया को सुचारू बनाना।
- **एगटेक और फिनटेक का अनुकूलन:** नवोन्मेष तथा प्रौद्योगिकी प्रगति को फलने—फूलने के लिए अनेक क्षेत्रों में एगटेक और फिनटेक स्टार्टअप्स की वृद्धि को बढ़ावा देना।
- **एआईजी सम्पर्कों का पोषण:** कृषि में सहयोगात्मक समस्या समाधान और उनके कार्यान्वयन को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षा—उद्योग—सरकार संबंधों को सबल बनाना।
- **स्टार्ट—अप पारिस्थितिकी प्रणाली में जीवंतता:** कृषि स्टार्ट—अप के लिए संवेदनशीलता और समर्थन के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर निधि प्रवाह और स्टार्ट—अप उद्भव को संतुलित करना।
- **इन्क्यूबेशन अवसंरचना का सबलीकरण:** इन्क्यूबेशन केंद्रों को सशक्त बनाने और उनके संचालन को बनाए रखने के लिए सीएसआर निधियों का उपयोग करना।
- **क्षमता विकास:** सार्वजनिक और निजी संगठनों के बीच सफल सार्वजनिक—निजी साझेदारी (पीपीपी) प्रस्तावों को विकसित करने के लिए संयुक्त क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना।
- **नवाचार मंच का निर्माण:** सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) और विशिष्ट हस्तक्षेपों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के हितधारकों को शामिल करते हुए एक सहयोगी नवाचार मंच की स्थापना करना।

‘जैव-उद्दीपक दिशानिर्देश’ पर विचार-मंथन सत्र (संयोजक: डॉ. पी.के. चक्रवर्ती और डॉ. वी. चिन्नुसामी)

अकादमी ने 21 जुलाई, 2023 को जैवउद्दीपकों पर हाइब्रिड मोड में विचार—मंथन सत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने की तथा डॉ. पी.के. चक्रवर्ती (पूर्व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल सदस्य, पादप विज्ञान) और डॉ. सी. विश्वनाथन (संयुक्त निदेशक अनुसंधान, भा.कृ.अ.स.) ने इसका संयोजन किया। डॉ. पाठक के उद्घाटन भाषण के बाद, जैवउद्दीपकों की पृष्ठभूमि, दिशा—निर्देश / आंकड़ा अपेक्षा और इस पर्यावरण अनुकूल तकनीक का अधिकतम लाभ उठाने के लिए सक्षम नीतियों को तैयार करने



की सर्वोपरि आवश्यकता पर मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। बाद में विचार-विमर्श के आधार पर, निम्नलिखित सिफारिशें की गईं:

1. जैवउद्दीपकों के लिए मसौदा दिशा-निर्देशों में गहन संशोधन की आवश्यकता है। भले ही सूक्ष्मजीवों और संयोजनों को 'जैवउद्दीपकों' की परिभाषा में शामिल किया गया है, लेकिन इसमें 'सूक्ष्मजैविक जैवउद्दीपकों' की श्रेणी अनुसूची से गायब है। इसलिए, सूक्ष्मजीवों और उनके संघों को एक श्रेणी के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
2. यद्यपि जैव पीड़कनाशकों जो रोगाणुओं को मारते हैं या सीधे प्रभावित करते हैं, वे जैव उद्दीपक के रूप में योग्य नहीं हैं, लेकिन सूक्ष्मजीव या अणु जो रोगाणुओं/पीड़कों के खिलाफ पौधों में प्रतिरोध प्रदान करने के लिए जन्मजात रक्षा पथ को प्रेरित करते हैं, उन्हें भी जैव उद्दीपक के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।
3. कंपनियों/उद्योग संघ के सहयोग से तैयार एकत्रित आंकड़ों को जैवउद्दीपकों के रूप में पंजीकरण हेतु केंद्रीय जैवउद्दीपक समिति (सीबीसी) द्वारा स्वीकृत किया जाना चाहिए।
4. सीबीसी द्वारा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/संस्थानों में सृजित जैवउद्दीपकों पर जैव सुरक्षा संबंधी आंकड़ों पर विचार किया जाना चाहिए, बशर्ते कि जैव सुरक्षा संबंधी आंकड़े पूर्व में अधिसूचित दिशानिर्देशों अर्थात् तीन कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रों में एक मौसम के लिए न्यूनतम तीन विभिन्न खुराकों को अपनाते हुए सृजित किये गये हों।
5. अनुसूचित जैवउद्दीपकों के लिए अच्छे प्रयोगशाला अभ्यास मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में उत्पन्न विषाक्तता आंकड़े, या किसी अन्य ओईसीडी देश में कृषि उपयोग के लिए विनियमों द्वारा स्वीकार किए गए डेटा को डेटा प्रणाली की पारस्परिक स्वीकृति के आधार पर भारत में स्वीकार किया जाना चाहिए।
6. यदि किसी जैवउद्दीपक के विषाक्तता संबंधी आंकड़े उच्च सांद्रता पर सुरक्षित और अनुमोदित पाये गये हों, तो उन्हें कम सांद्रता पर उसी उत्पाद के लिए इसे माफ कर दिया जाना चाहिए।
7. त्वरित भंडारण स्थिरता अध्ययन के तहत उत्पन्न भंडारण आंकड़े के साथ निधानी आयु संबंधी दावे को जैवउद्दीपक के पंजीकरण हेतु स्वीकार किया जाना चाहिए।
8. उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 की अनुसूची VI में सूचीबद्ध पदार्थों की दो या अधिक श्रेणियों के संयोजन वाले जैव उद्दीपक योगों की अनुमति दी जा सकती है।
9. पत्तियों पर प्रयोग के लिए जैवउद्दीपक फॉर्मूलेशन में जिंक (1500 पीपीएम) और कॉपर (600 पीपीएम) का अधिकतम अनुमत्य स्तर (एमपीएल) अनुशंसित किया गया है (विनियमन (ईपू) 2019 / 1009)।

10. कीटनाशक अनुसूची में ऐसे रसायन शामिल हैं जो दोहरे कार्य करते हैं जैसे कि चिटोसन, ब्रासिनोलाइड्स, नील-हरित शैवाल के सत, विटामिन और वृद्धि नियामक जैसे कि गिबरेलिन, आईएएए, 2-4डी, साइटोकाइनिन और अन्य, जो जैवउद्दीपकों के गुणों को भी साझा करते हैं। इन पदार्थों को कीटनाशक अनुसूची से बाहर रखा जाना चाहिए और कीटनाशकों और जैवउद्दीपकों के रूप में उपयोग किए जाने पर पौधों में उनकी प्राकृतिक सीमा तक जैवउद्दीपकों में उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

‘पशुधन और मुर्गी पालन क्षेत्र का हरितकरण: सतती दृष्टिकोण विकसित करने के लिए नीति विकल्प’ पर विचार-मंथन सत्र (संयोजक: डॉ. बी. उम. नवीना)

अकादमी ने 1 सितंबर, 2023 को डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में हाइब्रिड मोड में एक विचार-मंथन सत्र आयोजित किया। विचार-विमर्श से निम्नलिखित प्रमुख सिफारिशों सामने आईः

- मीथेन उत्पादन को कम करने के लिए पशुओं की आंत्र किण्वन विशेषताओं में परिवर्तन लाने के लिए पोषणिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता है। मीथेनोजेनेसिस को रोकने के लिए उपयोग किए जा सकने वाले फीड अवयवों और योजकों का चयन किया जाना चाहिए।
- कम उत्पादन वाले पशुओं के पर्यावरणीय और आर्थिक प्रभाव का आकलन करना तथा प्रत्येक कृषि-आर्थिक क्षेत्र के लिए विशिष्ट व्यापक मॉडल विकसित करना।
- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना तथा अपशिष्ट के मूल्य निर्धारण के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास करना (सह-उत्पादन, बायोगैस, शून्य-निर्वहन प्रौद्योगिकियाँ) जो आय के नए रास्ते प्रस्तुत करती हैं तथा कार्बन क्रेडिट जलवायु वित्तपोषण को सुविधाजनक बनाते हैं।
- बीआईएस, एफएसएसएआई, ईआईसी, एपीडा आदि जैसे संबंधित विभागों के साथ नीतिगत संवाद के माध्यम से मांस, डेयरी और पोल्ट्री उत्पादों के लिए कम कार्बन या शून्य कार्बन लेबलिंग दिशानिर्देश विकसित किए जा सकते हैं।
- सभी सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए पशुधन और कुकुट क्षेत्र का हरित करण सुनिश्चित करते हुए राष्ट्रीय नीति ढांचे को सक्षम बनाने हेतु समग्र संस्थागत दृष्टिकोण और अंतर-क्षेत्रीय एकीकरण।
- संबंधित भा.कृ.अ.प. संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की पहचान करके ‘जीवनचक्र आकलन’ के माध्यम से पशुधन के कार्बन फुटप्रिंट और मात्रात्मक डेटा सुजन का अनुमान लगाने के लिए एक नेटवर्क परियोजना शुरू की जा सकती है।



‘भारतीय कृषि में फसल सुरक्षा के लिए डीएसआरएनए आधारित जैव कीटनाशकों की संभावनाएं’ पर विचार-मंथन सत्र (संयोजक: डॉ. बी. मंडल)

दिनांक 26 सितंबर, 2023 को हाइब्रिड मोड में एक विचार-मंथन सत्र आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के विशेषज्ञों और अनुसंधानकर्ताओं सहित 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।



चर्चा के दौरान, केंद्रीय विषय रासायनिक कीटनाशकों से अलग इस तकनीक के लिए उपयुक्त शब्दावली तैयार करने के

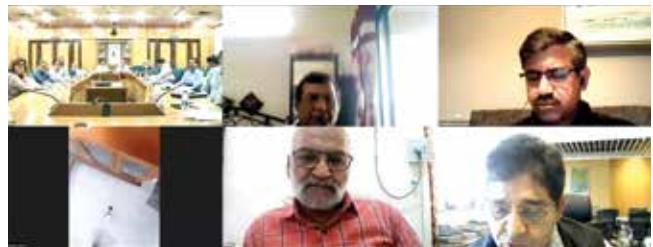
इर्द-गिर्द धूमता रहा। इस सत्र में काफी कम लागत पर क्षेत्र अनुप्रयोगों के लिए dsRNA उत्पादन का विस्तार करने की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई, और तकनीकी चुनौतियों की एक शृंखला की जांच की गई, जिन्हें क्षेत्र में इसके व्यावहारिक उपयोग को सक्षम करने के उपाय किये जाने चाहिए, ताकि प्रक्षेत्र में इनके उपयोग की लागत उल्लेखनीय रूप से कम हो सके और उन प्रौद्योगिकी चुनौतियों की समीक्षा की जा सके, जो सक्षम हैं और जिनका खेत में व्यावहारिक उपयोग हो सकता है। इसके अंतर्गत पादप प्रणाली में लागू किये गये dsRNA का प्रभावी अंतरग्रहण और उसकी स्थिरता शामिल हैं। लक्षित पीड़कों के विरुद्ध स्थिरता और प्रभावशीलता को बढ़ाने वाले स्थिर फार्मूलेशन तैयार करने के लिए नैनो कणों और सूक्ष्मजैविक वाहकों के माध्यम से विभिन्न प्रदानीकरण तकनीकें विकसित की जानी चाहिए, तथा किसानों के खेतों में वाणिज्यिक स्तर पर जारी किये जाने के पहले सुरक्षा मूल्यांकन और जोखिम आकलन के लिए इनका मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

अभी तक भारत में dsRNA का काम पौधों के विषाणुओं पर केंद्रित है, लेकिन अन्य लक्षित रोगजनकों, कीटों और खरपतवारों के विरुद्ध इसका उपयोग करने की बहुत संभावना है। रासायनिक कीटनाशकों के विकल्प के रूप में डीएसआरएनए प्रौद्योगिकी के उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए जैव सुरक्षा मानदंड और विनियमन स्थापित करना आवश्यक है।

‘कृषि और कृषि प्रसंस्करण में सौर ऊर्जा के ड्रेनेक उपयोग’ पर विचार-मंथन सत्र (संयोजक. डॉ. उज.उस.उल. श्रीवास्तव)

डॉ. ए.के. सिंह (उपाध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 5 अक्टूबर 2023 को हाइब्रिड मोड में विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया। कृषि उत्पादन, कृषि प्रसंस्करण और कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन में विभिन्न उद्देश्यों और तरीकों के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग पर चर्चा के आधार पर, यह देखा गया

कि विनिर्देशों के मानकीकरण, मूल्यांकन और परीक्षण के लिए अधिक अनुसंधान सुविधाओं और इन प्रौद्योगिकियों के बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए पायलट पैमाने पर प्रदर्शनों की आवश्यकता है। विचार-विमर्श से प्रमुख सिफारिशें उभरकर सामने आयी।



अनुसंधान योज्य मुद्दे

- कई राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, भा.कृ.अ.प. संस्थानों और अन्य संगठनों में कृषि-वोल्टाइक प्रणालियों पर अनुसंधान एवं विकास से स्पष्ट संकेत मिलता है कि भारत में कृषि में प्रौद्योगिकी के उपयोग की अपार संभावनाएं हैं। हालांकि, विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभिन्न फसलों के लिए सौर फोटोवोल्टिक (पीवी) पैनलों की पंक्तियों के बीच की दूरी, पीवी पैनलों की स्थापना की ऊंचाई, पीवी पैनलों से धूल हटाने की व्यवस्था आदि के बारे में कोई निश्चित सिफारिशें उपलब्ध नहीं हैं।
- भारत सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अनुदान पर कृषि क्षेत्र में सौर जल पम्पिंग प्रणाली को लोकप्रिय बनाया जा रहा है। इन प्रणालियों की कार्यप्रणाली, जल उपयोग दक्षता और बिक्री के बाद की सेवा की स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है।
- कृषि उत्पादन की आवश्यकता और स्थान विशेष पर सौर ऊर्जा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न रथानों के लिए सौर ऊर्जा उपकरणों के पैकेज को अंतिम रूप दिया जा सकता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उपज के प्रसंस्करण के लिए विभिन्न स्थिर कृषि मशीनरी/गैजेट्स को संचालित करने के लिए वहनीय पीवी इंस्टॉलेशन वाली मोबाइल पीवी पावर यूनिट को विकसित, प्रदर्शित और लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है।
- तापीय ऊष्मा भंडारण विधियों और सामग्रियों को विकसित करने तथा सुखाने, शीत भंडारण आदि में उनके अनुप्रयोगों के लिए प्रयास किए गए हैं। हालांकि, कुशल ऊष्मा सामग्रियों और विधियों को विकसित करने के लिए और अधिक काम किए जाने की आवश्यकता है।
- सौर ऊर्जा से सुखाने पर काम करते समय, बिजली उत्पादन और सम्पूर्ण मूल्य शृंखला को आर्थिक लाभ के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है।
- भूतापीय ऊर्जा को स्वच्छ और कम लागत वाली ऊर्जा के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ग्रीन हाउस, जलीय कृषि संरचनाओं, मुर्गीपालन और पशु आश्रयों को गर्म करने के लिए भू-तापीय ऊर्जा के अनुप्रयोग का पता लगाया जाना चाहिए।
- ग्रीनहाउस कृषि-वोल्टाइक प्रणाली एक अन्य संभावित क्षेत्र है और इस पर अधिक अन्वेषण की आवश्यकता है।

परीक्षण और मूल्यांकन संबंधी मुद्दे

- बाजार में सौर ऊर्जा आधारित कई उपकरण उपलब्ध हैं, जिनमें अलग—अलग निष्पादन का दावा किया गया है। विनिर्देशों को लंबी अवधि के परीक्षणों के आधार पर प्रदर्शन मूल्यांकन मापदंडों के साथ मानकीकृत करने की आवश्यकता है।
- यद्यपि सौर ऊर्जा उपकरणों/प्रणाली की परीक्षण सुविधा राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान में उपलब्ध है। तथापि, अधिक परीक्षण केन्द्रों की आवश्यकता है। एनएआरएस के तहत अधिमान्य ईएएआई (कृषि आधारित उद्योगों पर कृषि के लिए ऊर्जा) पर एआईसीआरपी के केंद्रों पर स्थापित किया जाना चाहिए ताकि इनके निष्पादन का मूल्यांकन किया जा सके और बाजार में उपलब्ध उपकरणों को प्रमाणित किया जा सके।
- विभिन्न क्षमता के लिए सौर शीत भंडारण की विशिष्टताओं को मानकीकृत करने की आवश्यकता है।
- यद्यपि सौर शुष्कन पर सर्वाधिक अन्वेषण किया गया है। विभिन्न प्रकार की शुष्कन प्रणालियाँ व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हैं और शुष्कित उत्पादों की खरीद—वापसी सहित विभिन्न तरीकों से बेची जाती हैं। इन प्रणालियों का उचित परीक्षण किया जाना चाहिए और विनिर्देशों के मानकीकरण के साथ—साथ प्रदर्शन मापदंडों को अनुकूलित किया जाना चाहिए।
- पीवी नेट—शेड एक उभरती हुई प्रौद्योगिकी है जिसका भारतीय परिस्थितियों में परीक्षण और प्रवर्धन किया जा सकता है।

प्रवर्धनात्मक/नीतिगत मुद्दे

- नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) राष्ट्रीय स्तर पर सौर ऊर्जा कार्यक्रमों और नीतियों के विकास और कार्यान्वयन में लगा हुआ है। कृषि में सौर ऊर्जा के अनुप्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एमएनआरई और भा.कृ.अ.प. कार्यक्रम के बीच एक मजबूत संबंध विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- सौर जल पर्मिंग प्रणाली का उपयोग ज्यादातर एकल प्रणाली के रूप में किया जाता है, इसलिए इन प्रणालियों के अनुप्रयोग को अन्य अनुप्रयोगों के लिए भी बढ़ाया जाना चाहिए, जैसे कि कृषि प्रसंस्करण केन्द्रों, चार्जिंग केन्द्रों को बिजली प्रदान करना और थेसर, स्प्रेयर, वीडर आदि जैसी स्थिर कृषि मशीनरी का संचालन करना।
- ग्रिड से जुड़ी और उचित लेआउट विन्यास वाली कृषि—वोल्टाइक प्रणाली को राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय और बढ़ावा दिया जा सकता है और इसे अनुदान कार्यक्रम के तहत लाया जा सकता है। नेट मीटिंग के माध्यम से किसानों को लाभ का बंटवारा सुनिश्चित किया जाना चाहिए। चोरी के खिलाफ सौर पैनल बीमा की व्यवस्था पर काम करने की आवश्यकता है।
- शीत भंडारण प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए किसानों के खेतों/मंडियों में सौर शीत भंडारण प्रणाली का बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किया जा सकता है।

- फलों और सब्जियों को सुखाने के लिए सौर ऊर्जा से सुखाने और स्थान को गर्म करने की प्रणाली को बढ़ावा दिया जा सकता है। बड़े पैमाने पर प्रदर्शन, क्षमता निर्माण, जागरूकता और लोकप्रियकरण के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों को सौर तापीय प्रणालियों से सुसज्जित किया जा सकता है।
- ग्रामीण युवाओं के लिए सौर ग्रीनहाउस और कृषि के लिए कौशल विकास कार्यक्रम वॉल्टेइक प्रौद्योगिकियों को अपनाया जाना चाहिए।
- सौर ऊर्जा से सभी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने वाले एक मॉडल सौर आधारित ग्रीन हाउस का प्रदर्शन किया जाना चाहिए तथा उच्च मूल्य वाली फसलों के लिए इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- ताप भंडारण सुविधाओं वाले शुष्ककों का बड़े पैमाने पर प्रदर्शन सार्वजनिक निजी साझेदारी मोड के तहत किया जाना चाहिए।

‘मृदा स्वास्थ्य बनाये रखने और सुधार’ पर विचार-मंथन सत्र (संयोजक: डॉ. बी. उस. द्विवेदी, सह-संयोजक: डॉ. अनिल के. सिंह)

अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. जे.सी. कत्याल की अध्यक्षता में 28 अक्टूबर, 2023 को “मृदा स्वास्थ्य बनाये रखने और सुधार” पर विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया।

मृदा स्वास्थ्य और अन्य प्राकृतिक संसाधनों में गिरावट को अब हरित क्रांति के बाद की दूसरी पीढ़ी की सबसे महत्वपूर्ण समस्या माना जाता है, जो कृषि उत्पादन के अस्तित्व को खतरे में डाल रही है। मृदा स्वास्थ्य को बनाये रखना और वृद्धि दुनिया भर में बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर विकासशील देशों में, क्योंकि सीमित भूमि संसाधनों पर



जनसंख्या का दबाव लगातार बढ़ रहा है। विचार-विमर्श से प्रमुख सिफारिशों सामने आई हैं:

- अधिकांश मामलों में मृदा स्वास्थ्य को मृदा परीक्षण मानों के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है, इसलिए ध्यान मुख्य रूप से मृदा उर्वरता पर होता है। जैविक मापों को शामिल करना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। पूरे देश में मृदा कार्बन अनुसंधान का मार्गदर्शन करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मृदा कार्बन अनुसंधान केंद्र की आवश्यकता है।
- मिट्टी के जैविक गुणों और व्यवहार की बेहतर समझ मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए मृदा सूक्ष्मजीवों की क्षमता का दोहन करने के लिए विभिन्न मृदा-फसल प्रबंधन प्रथाओं के तहत मृदा सूक्ष्मजीवों

का उपयोग महत्वपूर्ण है। मृदा स्वास्थ्य की स्थिति के संबंध में मृदा के जैविक गुणों के थ्रेसहोल्ड स्तरों को स्थापित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। मृदा स्वास्थ्य की स्थिति के संवेदनशील संकेतक के रूप में सूक्ष्मजीवों के उपयोग की व्यवहार्यता का आकलन किया जाना चाहिए।

- ग्लौकोनाइट (हरा अम्ब्रक) अवक्षेपों से पोटेशियम निकालने के लिए आवश्यक नीतिगत पहलों की आवश्यकता है। इसके अलावा, वैकल्पिक उपयोग के स्रोतों जैसे, अपशिष्ट अम्ब्रक, पाटेशियम समृद्ध कम्पोस्ट, फसल अवशेष, आदि, के उपयोग पर भी जोर दिया जाना चाहिए।
- देश में धातु और धात्विक पदार्थों, सूक्ष्म प्लास्टिक और कार्बनिक प्रदूषकों के कारण मृदा और जल प्रदूषण की सीमा का आकलन किया जाना चाहिए। पौधों, पशुओं और मनुष्यों में स्थानांतरित होने वाले प्रदूषकों के जोखिम का आंकलन किया जाना चाहिए और उनके प्रभावी प्रबंधन के लिए कार्यनीतियां तैयार की जानी चाहिए।
- वर्तमान मृदा स्वास्थ्य निगरानी नेटवर्क को बेहतर कार्यप्रणाली और आधुनिक उपकरणों जैसे कि हाथ में पकड़े जाने वाले उपकरण और सेंसर को शामिल करके मजबूत किया जाना चाहिए। किसानों को कार्बन क्रेडिट और ग्रीन क्रेडिट प्रदान करने की व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।
- मृदा एवं फसल प्रणाली—विशिष्ट संरक्षण कृषि प्रौद्योगिकियों के विकास / परिष्करण तथा मृदा स्वास्थ्य एवं फसल उत्पादकता पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए, पोषक तत्व—जल—जुताई अंतःक्रियाओं से युक्त दीर्घकालिक, बहु-स्थानीय प्रयोग आरंभ किये जाने चाहिए।
- राष्ट्रीय भू—स्थानिक नीति 2022 के ढांचे के अंतर्गत मिट्टी के विषयगत क्षेत्र में एक सशक्त एकीकृत मृदा सूचना प्रणाली की आवश्यकता है।
- भारत की भूमि उपयोग नीति (2013) को अभी तक सरकार द्वारा अनुमोदित और अपनाया नहीं गया है मसौदा दस्तावेज के प्रकाशन के बाद से एक दशक बीत चुका है। इसके बाद, अकादमी ने एक मृदा और भूमि उपयोग नीति भी विकसित की और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग को प्रस्तुत की। इन्हें उचित रूप से एकीकृत करने और औपचारिक रूप से अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें भविष्य की खाद्य सुरक्षा और रिथरता के दृष्टिकोण से प्रमुख भूमि को चित्रित करने और संरक्षित करने पर उचित बल दिया जाना चाहिए।

‘स्मार्ट उनिमल फार्मिंग: पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की ओर परिप्रेक्ष्य नियोजन’ पर विचार-मंथन सत्र (संयोजक: डॉ. वार्डु. उस. मलिक)

दिनांक 22 मार्च, 2024 को हाइब्रिड मोड में ‘स्मार्ट एनिमल फार्मिंग: 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की ओर परिप्रेक्ष्य नियोजन’ पर एक विचार मंथन सत्र आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हिमांशु पाठक, (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने की और सह-अध्यक्षता डॉ. के.एम. बुजरबुआ, (उपाध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने की। चर्चा के आधार पर विचार-विमर्श से प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार थीं:



- निवेश उपयोग को अनुकूलित करने और लागत को कम करने के लिए डेयरी फार्मिंग में यंत्रीकरण और स्वचालन को प्रोत्साहित करें। नई प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन करने के लिए उन्नत सेंसर और डेटा विश्लेषण क्षमताओं के साथ चयनित डेयरी फार्मों को सटीक डेयरी फार्मों में बदला जाना चाहिए।
- स्मार्ट एनिमल फार्मिंग संबंधी कार्यनीतियों के सफल कार्यान्वयन के लिए सार्वजनिक क्षेत्रों, निजी क्षेत्रों और किसानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए।
- राष्ट्रीय उत्पादन प्रणाली के अनुरूप छोटे किसानों के लिए स्मार्ट पशु उत्पादन प्रौद्योगिकियों के विकास की दिशा में अनुसंधान को पुनर्निर्देशित करना चाहिए।
- थनैला, प्रजनन निदान और रोग निदान जैसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए कृत्रिम एआई—आधारित प्रौद्योगिकियों का विकास करना चाहिए।
- सतत नस्ल उपयोग के लिए जीनोमी चयन और प्रजनन कार्यक्रम, मूल्यवर्धन पर बल देने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- देश भर में स्मार्ट एनिमल फार्मिंग के लिए मानकीकृत पद्धतियां स्थापित की जानी चाहिए।
- किसानों को स्मार्ट एनिमल फार्मिंग पद्धतियों पर शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
- पशुधन के लिए व्यापक स्वास्थ्य कवरेज और वैक्सीन उत्पादन इकाइयां विकसित की जानी चाहिए, ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित होनी चाहिए।

विशेषज्ञ परामर्श

‘स्वच्छ पादप कार्यक्रम’ पर विशेषज्ञ परामर्श (संयोजक: डॉ. वी.के. बरनवाल)

रा.कृ.वि.अ. द्वारा हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में हाइब्रिड मोड में ‘स्वच्छ पादप कार्यक्रम’ पर 03 अप्रैल 2023 को विशेषज्ञ परामर्श आयोजित किया गया, जिसमें अंगूर, सेब और नींबू सहित बारहमासी और क्लोन द्वारा प्रवर्धित फल फसलों के लिए स्वच्छ रोपण सामग्री के

उत्पादन पर चर्चा की गई, जहाँ रोपण सामग्री की मांग बहुत अधिक है। इस कार्यक्रम में 80 से अधिक रा.कृ.वि.अ. अध्येताओं और भा.कृ.अ.प. के संस्थानों, कृषि/बागवानी विश्वविद्यालयों और निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों ने भाग लिया और अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए। विचार-विमर्श के परिणामस्वरूप निम्नलिखित सिफारिशों की गई:



- कलोन द्वारा प्रवर्धित फल फसलों की रोपण सामग्री की भारी मांग और विषाणुओं से उत्पन्न उच्च जोखिम को देखते हुए, स्वच्छ पादप कार्यक्रम की तत्काल आवश्यकता है।
- राष्ट्रीय स्वच्छ पादप कार्यक्रम केन्द्र के माध्यम से सीपीपी की सुचारू तैयारी के लिए एक शीर्ष निकाय की स्थापना की जानी चाहिए।
- भा.कृ.अ.प. संस्थानों या कृषि/बागवानी विश्वविद्यालयों में फसलवार स्वच्छ पादप केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं, जिनमें विषाणु विज्ञान और ऊतक संवर्धन में प्रशिक्षित वैज्ञानिक, आवश्यक प्रयोगशाला सेट-अप और ग्रीन हाउस/नेट हाउस (यदि मौजूद नहीं हैं) के निर्माण के लिए आवश्यक भूमि होनी चाहिए।
- सी.पी.सी. को प्रमाणित नर्सरियों को पौधों के रखरखाव, प्रगुणन और उत्पादकों को वितरण के लिए स्वच्छ पौध स्टॉक उपलब्ध कराना चाहिए।
- फलदार पौधों की रोपण सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराकर, यह कार्यक्रम किसानों को अधिक आय, निर्यात के माध्यम से अधिक विदेशी मुद्रा तथा उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता प्राप्त करने में मदद करेगा।

‘अनुसंधान प्रकाशन की नैतिकता और वर्तमान स्थिति’ पर विशेषज्ञ परामर्श (संयोजक: डॉ. जी. तासू शर्मा)

रा.कृ.वि.अ. द्वारा हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 31 अगस्त 2023 को हाइब्रिड मोड में एक विशेषज्ञ परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। विश्व भर में तेजी से बदलते प्रकाशन परिदृश्य को देखते हुए, अनुसंधान निष्कर्षों को कैसे प्रकाशित और संप्रेषित किया जाता है, इस पर पुनरावलोकन की आवश्यकता है। चर्चा के दौरान निम्नलिखित बिंदु उभर कर सामने आएः

- प्रकाशन में नैतिकता के संबंध में भा.कृ.अ.प. के संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में उपलब्ध मौजूदा दिशानिर्देशों की समीक्षा की जानी चाहिए और विशेषज्ञों के परामर्श के बाद

दिशानिर्देशों में आवश्यक सुधार या परिवर्तन किए जा सकते हैं।

- इसी प्रकार प्रकाशकों, पत्रिकाओं, सपादकों और समीक्षकों के लिए नैतिक दिशानिर्देश विकसित किए जा सकते हैं।
- रा.कृ.वि.अ. रेटिंग के लिए आने वाले जर्नलों का सीओपीई तथा मुख्य संपादक/संपादक की प्रतिबद्धता के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- सभी रा.कृ.वि.अ. जर्नलों में नैतिक मापदंड और प्रकाशन नीतियां शामिल की जाएंगी। रा.कृ.वि.अ. रेटिंग के लिए स्कोरकार्ड विकसित करते समय समकक्ष समीक्षा प्राप्त भारतीय जर्नलों के संपादकों और संपादकीय बोर्ड के सदस्यों को समिति में शामिल किया जा सकता है।
- जर्नल के प्रभाव कारक, जिसे लेखक की मान्यता, कैरियर में उन्नति या पुरस्कार/सम्मान के लिए एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्राचलों के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। हालांकि, सरकार की प्रमुख राष्ट्रीय पहलों को संबोधित करते हुए प्रकाशन के सामाजिक प्रभाव को भी उचित महत्व दिया जाना चाहिए।
- मास्टर्स और डॉक्टरेट डिग्री पुरस्कारों के लिए अनिवार्य प्रकाशनों की संख्या से संबंधित दिशानिर्देशों का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- बहु-लेखकीय प्रकाशन में, प्रत्येक लेखक के योगदान को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करना चाहिए। किसी व्यक्ति के प्रशासनिक/वैज्ञानिक रूप से उच्च पद के आधार पर 'मानद' या 'उपहार' लेखकत्व स्वीकार करना या प्रदान करना अनैतिक है।
- भा.कृ.अ.प.—राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं प्रबंधन अकादमी द्वारा वैज्ञानिकों/शिक्षकों के लिए अनुसंधान प्रकाशन में नैतिकता के बारे में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसी तरह, कार्यकारी विकास कार्यक्रम के दौरान निदेशकों और कूलपतियों को भी इसके बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।
- अनुसंधानकर्ताओं को अपने अनुसंधान कार्य को समकक्ष—समीक्षित मुक्त—पहुंच जर्नलों में प्रस्तुत करने के लिए परियोजना निधि (विशेष रूप से बाह्य परियोजना) के माध्यम से एक अलग बजट आवंटित किया जाना चाहिए।
- प्री—प्रिंट अभिलेखागार (तग्पअ, रिसर्च स्क्वेयर) 'विचार साहित्यिक चौरी' को रोकने में मदद कर सकते हैं जो समकक्ष—समीक्षित जर्नलों में पारंपरिक प्रकाशन की प्रक्रिया में हो सकता है।



- भारतीय जर्नलों के प्रकाशन मानकों को निःशुल्क ई—सदस्यता, समयबद्ध समीक्षा/प्रकाशन प्रक्रिया, संपादकीय बोर्ड में विविधता द्वारा सुधारा जा सकता है।

‘सीओपी 28- भारतीय कृषि के लिए तैयारी’ पर विशेषज्ञ परामर्श (संयोजक: डॉ. पी.के. अग्रवाल)

सीओपी 28 के लिए भारत के वार्ताकारों को कृषि के दृष्टिकोण से समर्थन प्रदान करने के लिए डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 25 सितंबर, 2023 को राष्ट्रीय विशेषज्ञों की एक परामर्श बैठक आयोजित की गई। इसमें कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा भारत के विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के अधिकारियों और विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस चर्चा का मुख्य उद्देश्य सीओपी में नुकसान और क्षति, ग्रीन कार्बन क्रेडिट तथा अनुकूलन एवं शमन पर सरकारी योजनाओं के निहितार्थों के बारे में संभावित चर्चा का समर्थन करने के लिए कृषि के दृष्टिकोण से समग्र आवश्यकताओं, शक्तियों और कमजोरियों की समीक्षा करना था। विस्तृत चर्चा से निम्नलिखित सिफारिशों सामने आई:



- इसकी पुष्टि की जानी चाहिए कि कृषि क्षेत्र (पशुधन, उर्वरक और चावल के खेत) से भारत का उत्सर्जन विलासिता उत्सर्जन नहीं बल्कि जीवन रक्षा उत्सर्जन है और यह मध्यम और छोटे जोत वाले कृषक समुदाय की आजीविका सुरक्षा के लिए आवश्यक है। साथ ही, भारत का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन वैशिक मानकों की तुलना में कम है।
- अनुकूलन और शमन के दृष्टिकोण से कृषि में वर्तमान सरकारी निवेश के मूल्यांकन को सीओपी 28 में भारतीय वार्ताकारों द्वारा उजागर किया जाना चाहिए।
- सौर एवं जैव ईंधन गढ़बंधन में भारत की पहल एवं नेतृत्व तथा ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने और कृषि में लचीलापन बनाने में उनके योगदान को उजागर किया जाना चाहिए।
- भारतीय किसानों की समुत्थानशीलता क्षमता विकसित करने के लिए भारी मात्रा में जलवायु के लिए वित्त निर्धारण की आवश्यकता है (राशि अज्ञात है, लेकिन अनुमान है कि यह खरबों डॉलर में होगी)।
- हमें वर्तमान जलवायु के साथ—साथ भविष्य के परिदृश्यों में बुनियादी ढांचे और व्यापार सहित कृषि मूल्य श्रृंखला में स्थानिक और लौकिक नुकसान और क्षति का शीघ्रता से अनुमान लगाने

के लिए गतिविधियाँ शुरू करनी चाहिए। उपरोक्त नुकसान और क्षति अनुमानों से जुड़े अनुकूलन के लिए आवश्यक जलवायु वित्त निर्धारण के अनुमानों पर भी काम करने की आवश्यकता है। ये अनुमान वैश्विक स्टॉक टेक के प्रति हमारी प्रतिक्रिया प्रस्तुत करने में मदद करेंगे।

6. विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार की योजनाओं के माध्यम से किए जा रहे निवेश से उत्पन्न अनुकूलन और शमन क्षमता और इसके कार्यान्वयन का एक व्यापक अनुमान लगाया जाना चाहिए। ये अनुमान वैश्विक स्टॉक टेक को हमारी प्रतिक्रिया प्रस्तुत करने में भी मदद करेंगे।
7. हरित कार्बन बाजार की अनिश्चितता और कृषि प्रणालियों में कृषि स्तर पर ऋणों की निगरानी, मूल्यांकन और सत्यापन से संबंधित जटिल मुद्दों पर विचार करते हुए, किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए कार्बन ऋण सूजन हेतु कृषि में हरित ऋण योजना की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने के लिए अध्ययन किया जाना चाहिए।
8. कृषि क्षेत्र में अपने निवेश निर्णयों और योजनाओं के अनुकूलन और शमन पहलुओं को समझाने के लिए सरकारी अधिकारियों की क्षमता बढ़ाने के लिए एक लघु पाठ्यक्रम विकसित और प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

भावी सी.ओ.पी. के लिए अपने भावी रुख और तैयारी को मजबूत करने के लिए, भारत को उन पहलुओं पर डेटा तैयार करना चाहिए जिनके बारे में वर्तमान में सीमित जानकारी उपलब्ध है।

‘कृषि के लिए डिजिटल अनुक्रम सूचना’ पर विशेषज्ञ परामर्श (संयोजक: प्रो. राजीव के. वार्ष्य और प्रो. के.सी. बंसल)

दिनांक 26 मार्च, 2024 को मर्डॉक विश्वविद्यालय, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया और डिवसीक इंटरनेशनल के फसल एवं खाद्य नवाचार केंद्र के सहयोग से कृषि के लिए डिजिटल अनुक्रम सूचना पर एक विशेषज्ञ परामर्श बैठक आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में 25 देशों से 200 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया।

परामर्श की अध्यक्षता डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने की और प्रो. राजीव के. वार्ष्य (विदेश सचिव, रा.कृ.वि.अ.) और प्रो. के.सी. बंसल (पूर्व सचिव रा.कृ.वि.अ.) ने सह-संचालन किया। सत्र का आयोजन निम्नलिखित पहलुओं पर चर्चा करने के लिए किया गया था:



- डीएसआई के दायरे और परिभाषा को समझना
- डीएसआई के सूजन और भंडारण का महत्व

- अनुसंधान एवं विकास तथा फसल सुधार के लिए खाद्य एवं कृषि हेतु पादप आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग में डीएसआई की भूमिका
- डीएसआई तक पहुंच और उपयोग से संबंधित मुद्दे
- डीएसआई के उपयोग तथा लाभ में ईमानदारीपूर्ण और समान साझेदारी के लिए सामान्य क्रियाविधि विकसित करना।

कार्यनीतिपरक कार्यशालाएँ

“भारतीय मातिस्यकी क्षेत्र के लिए खाद्य सुरक्षा कार्यनीतियों” पर कार्यनीतिपरक कार्यशाला (संयोजक: डॉ. जी. जयशेखरन)

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 17 मई, 2023 को हाइब्रिड मोड में आयोजित एक कार्यनीतिपरक कार्यशाला में जलीय खाद्य पदार्थों में शामिल खाद्य सुरक्षा मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें सूक्ष्मजैविक संकट, रासायनिक संकट, प्रामाणिकता / पता लगाने की क्षमता, गुणवत्ता और सुरक्षा प्रबंधन, एक स्वास्थ्य योजना सहित जलीय खाद्य सुरक्षा में डब्ल्यूएचओ, एफएओ, यूएनईपी और डब्ल्यूएओएच की भूमिका और भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा कार्यनीतियों को लागू करने में शिक्षा और अनुसंधान का महत्व शामिल है। विचार-विमर्श के आधार पर प्रमुख सिफारिशें और कार्रवाई योग्य बिंदु निम्नलिखित हैं:



- जलीय खाद्य सुरक्षा पर विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से अद्वितीय जलीय खाद्य सुरक्षा मुद्दों से निपटने के लिए तकनीकी जनशक्ति का निर्माण करना
- राष्ट्रीय नीति के एक भाग के रूप में राष्ट्रीय जलीय खाद्य नियंत्रण प्रणालियों को सुदृढ़ बनाना
- जलीय खाद्य सुरक्षा चुनौतियों की पहचान और प्रतिक्रिया, तथा हितधारकों के साथ जुड़ाव और जोखिम संचार को मजबूत करना
- जलीय खाद्य श्रृंखला की जानकारी, वैज्ञानिक साक्ष्य, जलीय खाद्य अखंडता पर सही जोखिम प्रबंधन निर्णय लेने के लिए जोखिम मूल्यांकन के उपयोग में सुधार
- जलीय खाद्य पदार्थों के घरेलू विपणन में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में जलीय खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना

- जलीय पशु स्वास्थ्य की तरह ही जलीय खाद्य सुरक्षा पर भा. कृ.अ.प. द्वारा अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना की स्थापना की जानी चाहिए क्योंकि यह एक स्वास्थ्य अवधारणा है।
- जलीय खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं का पता लगाने की योग्यता और पारदर्शिता में सुधार लाने तथा जलीय खाद्य धोखाधड़ी से बचने के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का कार्यान्वयन
- जोखिम पूर्वानुमान और निगरानी के लिए जलीय खाद्य सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग
- भारत में उभरते सेल-आधारित जलीय खाद्य उत्पादों पर खाद्य सुरक्षा चुनौतियों का अध्ययन करना



‘मधुमकिखयां : मीठी क्रांति की वाहक’ विषय पर कार्यनीतिपरक कार्यशाला (संयोजक: डॉ. इस.सी. दुबे, सहायक महानिदेशक (पीपी एंड बी), सह-संयोजक: डॉ. प्रदीप कुमार छुनेजा, डीन, पीएयू)

डॉ. ए.के. सिंह (उपाध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 29 सितम्बर 2023 को हाइब्रिड मोड में एक कार्यनीतिपरक कार्यशाला आयोजित की गई। विस्तृत विचार-विमर्श से निम्नलिखित सिफारिशों सामने आईं:

- राष्ट्रीय स्तर पर मधुमक्खी पालन निदेशालय/अनुसंधान केंद्र और राज्य मधुमक्खी पालन विकास मंडलों की स्थापना विशेष मानव संसाधन के साथ की जानी चाहिए।
- मधुमक्खी पालन पर विषयों के साथ स्कूल पाठ्यक्रम विकसित करना, कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल, और स्नातकोत्तर स्तर पर मधुमक्खी पालन को एक विषय के रूप में सूचीबद्ध करना।
- संबंधित राज्य एजेंसियों द्वारा दी गई सूचना के आधार पर मधुमक्खी पालकों की संख्या, मधुमक्खी कालोनियों और शहद उत्पादन पर विश्वसनीय डाटाबेस का निर्माण।
- जीआई टैगिंग/ब्रांडिंग के लिए क्षेत्र और फसल-विशिष्ट शहद की प्रोफाइलिंग की जानी चाहिए।
- स्थिरता और सततता के लिए अनुसंधान और विकास गतिविधियों को मधुमकिखयों और परागणकों की स्वदेशी प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।
- सभी छत्ता उत्पादों के प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन तथा भारतीय छत्ता उत्पादों के लिए एफएसएसएआई मानकों को विकसित करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

- भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई—वित मंत्रालय), मधुमक्खी पालन के अनुकूल बीमा पॉलिसियों को विकसित करने में सुविधा प्रदान कर सकता है।
- सीआईबी एंड आरसी द्वारा पंजीकरण से पहले मधुमक्खियों के विरुद्ध कीटनाशकों की सुरक्षा का आकलन करने के लिए उनका मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- मानक मधुमक्खी छत्तों और अन्य मधुमक्खी पालन उपकरणों के निर्माण को बढ़ाने में विनिर्माण उद्योग को बढ़ावा देना और समर्थन दिया जाना चाहिए।
- कृषि विज्ञान केन्द्र स्तर पर मधुमक्खी रोग निदान के लिए क्षमता निर्माण और बुनियादी ढांचे की सुविधा होनी चाहिए।
- परती भूमि पर मधुमक्खी अनुकूल फूलदार वृक्ष लगाकर मधुमक्खी चारागाह के अंतर्गत क्षेत्र का विस्तार किया जाना चाहिए।
- केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा शहद के संग्रहण और भंडारण के लिए क्षेत्र/जिला/राज्य स्तर पर बुनियादी सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिये।
- एनबीबी/एनडीडीबी/एपीडा/राज्य कृषि निर्यात निगम आदि के साथ मिलकर शहद के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करना तथा नए उद्यमियों के लिए निर्यात प्रणाली के विकास को समर्थन देना।

विशेष कार्यक्रम

पैनल चर्चाएं

‘अमृत काल 2047’ के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार हेतु भावी दिशा तथा ‘कृषि में उभरती हुई चुनौतियों से निपटने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सबलीकरण’ पर डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 04 जून, 2023 को दो पैनल चर्चाएं आयोजित की गईं।

‘अमृत काल 2047’ के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार हेतु भावी दिशा (संयोजक: डॉ. पीके जोशी)

जैसी कि माननीय प्रधान मंत्री ने 2047 तक भारत के एक विकसित राष्ट्र के रूप में उभरने की कल्पना की है, जब हम अपनी आजादी की सौर्वं वर्षगांठ मनाएंगे, कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को अगले पच्चीस वर्षों में अवसरों का दोहन करने के लिए उपयुक्त नीतियों द्वारा समर्थित भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। विचार-विमर्श के आधार पर, यह प्रस्तावित किया गया कि राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान और शिक्षा प्रणाली में प्रमुख कार्यक्रम होने चाहिए,

जैसे, (1) उपलब्ध पौधे, पशु, मछली और सूक्ष्मजीवों के आनुवंशिक स्टॉक का लक्षण वर्णन, (2) पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए जल खाद्य-ऊर्जा संबंध का सामंजस्य, (3) कृषि में जैव-वृत्ताकार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, (4) कृषि और खाद्य प्रणाली के यंत्रीकरण के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि, (5) 3-डी महासागर खेती, (6) आनुवंशिक क्षमता और पशु स्वास्थ्य में सुधार, (7) विघटनकारी कृषि प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग, (8) हिमालय कृषि के लिए सतत दृष्टिकोण, (9) एक-स्वास्थ्य-एक-विश्व-दृष्टिकोण, (10) सतत एवं जलवायु समुत्थानशील कृषि प्रणालियां तथा (11) स्मार्ट परिनगरीय कृषि

कृषि में अमृत काल के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि:

- स्पष्ट लक्ष्य और लक्ष्य विकसित करें और उन्हें प्राथमिकता दें
- उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को पर्याप्त वित्तीय संसाधन आवंटित करें
- अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान अवसंरचना का विकास हो
- तेजी से बदलते विकास के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए वैज्ञानिकों के ज्ञान और कौशल का उन्नयन
- बहु-विषयक और बहु-संस्थागत साझेदारियां बनाई जाएं
- राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर उन्नत अनुसंधान और शिक्षा संस्थानों के साथ सहयोग करना
- कृषि शिक्षा और कृषि विस्तार प्रणाली में सुधार
- उन्नत प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए विभेदित एवं पृथक दृष्टिकोण अपनाना, तथा
- कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार प्रणाली की बदलती संरचना को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए नीतिगत सुधार लाना।

‘कृषि में उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सबलीकरण’ विषय पर पैनल चर्चा (संयोजक: डॉ. के.उम. बुजरबर्ड्डा)

कृषि में उभरती चुनौतियों का समाधान करने के लिए, विज्ञान, उद्योग और समाज के लिए तैयार छात्रों को फलने-फूलने और विकसित करने के लिए कृषि शिक्षा पर उचित ध्यान देने की आवश्यकता है। कृषि ज्ञान प्रसार में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/मानद विश्वविद्यालयों और केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अग्रणी हैं, और उन्हें वर्तमान व आसन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए सशक्त बनाना महत्वपूर्ण है। चूंकि शिक्षक न केवल विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, बल्कि संज्ञानात्मक कौशल (आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान) और सॉफ्ट स्किल्स (सामाजिक और भावनात्मक कौशल, सांस्कृतिक जागरूकता, सहानुभूति, दृढ़ता, टीमवर्क, नेतृत्व) पर



भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, इसलिए आवश्यक शैक्षणिक कौशल की भी आवश्यकता होगी। चर्चाओं से निम्नलिखित सिफारिशें सामने आईं :

- कृषि शिक्षा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ सामंजस्य
- अंतर-विश्वविद्यालय सहयोग को बढ़ावा देना
- शैक्षिक संस्थानों का वैश्वीकरण
- सार्वजनिक-निजी साझेदारी को बढ़ावा देना
- भा.कृ.अ.प. से अतिरिक्त सहायता प्राप्त करना
- कृषि विश्वविद्यालयों के विकास के लिए आईएयूए के साथ स्वायत्तता और नियामक चुनौतियों का समाधान करना।

वर्चुअल कार्यशाला

**‘खाद्य उवं पोषण सुरक्षा के लिए श्री अन्न: अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष उत्सव’
(संयोजक: प्रो. राजीव के. वार्ष्ण्य, सह-संयोजक: प्रो. के.सी. बंसल)**

अकादमी ने 17 अक्टूबर, 2023 को डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में विश्व खाद्य पुरस्कार फाउंडेशन के सहयोग से एक वर्चुअल कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला के दौरान प्रस्तुतियों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए श्री अन्न अनुसंधान के महत्व और जलवायु समुत्थानशील, पोषण सुरक्षा और कृषि के सतत विकास को संबोधित करने के लिए श्री अन्न को बड़े पैमाने पर अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।



अन्य गतिविधियां

शिक्षाशास्त्र विकास कार्यक्रम : नई पहल

अकादमी ने एक शिक्षाशास्त्र विकास कार्यक्रम (पीडीपी) शुरू किया और अब तक सात सत्रों के माध्यम से 300 से अधिक भा.कृ.अ.प. वैज्ञानिक लाभान्वित हो चुके हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रतिभागियों को एकीकृत करके प्रभावी शिक्षण में शिक्षकों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया था। शिक्षा शास्त्र विकास कार्यक्रम (पीडीपी) के अंतर्गत शिक्षा की बदलती गतिशीलता में शिक्षकों की उभरती जरूरतों को सफलतापूर्वक संबोधित किया गया। इससे व्यावसायिक विकास, आधुनिक शैक्षणिक तकनीकों को शामिल करने, प्रौद्योगिकी एकीकरण तथा शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए एक मंच उपलब्ध हुआ। विषयों की विविधता और व्यावहारिक अनुभवों ने प्रतिभागियों के लिए एक व्यापक सीखने का अनुभव सुनिश्चित किया।



विदेशी और प्रवासी अध्येताओं के योगदानों को बढ़ाने के लिए उनके साथ परिचर्चा बैठकें

दिनांक 20 मार्च, 2024 को ऑस्ट्रेलिया, एशिया और यूरोप क्षेत्रों के फेलो के लिए अकादमी में राकृ. वि.अ. विदेशी और प्रवासी अध्येताओं के साथ और 22 मार्च, 2024 को उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका क्षेत्रों के अध्येताओं के लिए दो वर्चुअल बैठकें आयोजित की गईं। दोनों बैठकों की अध्यक्षता डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने की और प्रोफेसर राजीव के. वार्षणेय (विदेश सचिव, रा.कृ.वि.अ.) ने इनका संयोजन किया।



विदेशी और अंतरराष्ट्रीय संगठनों से समर्थन और मार्गदर्शन के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। अकादमी की गतिविधियों के लिए व्यक्तिगत रूप से या अपनी संबद्ध व्यावसायिक सोसाइटियों के माध्यम से प्रवासी अध्येताओं की पहचान की गई। सहयोग के लिए पहचाने गए कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

- विशेष रूप से अनुसंधान के नए/उभरते क्षेत्रों में, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में भारत के कृषि वैज्ञानिकों का विदेश की अग्रणी प्रयोगशालाओं के साथ सहयोग।
- अकादमियों के बीच चर्चा को बढ़ावा देना तथा मृदा विज्ञान, पादप विज्ञान या पशु विज्ञान से संबंधित कुछ विशिष्ट विषयों पर युवा वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- शिक्षण गुणवत्ता, साझा उपाधियों, तथा वैज्ञानिक एवं छात्र विनिमय कार्यक्रमों को बढ़ाने के लिए कार्यनीति का विकास, अकादमी विदेशी एवं प्रवासी अध्येताओं के माध्यम से भा.कृ.अ.प. के शिक्षा प्रभाग के लिए एक संरचित कार्यक्रम के विकास में सहायता कर सकती है।
- सार/नीति पत्र लिखने, विशेषज्ञ परामर्श बैठकें करने और विचार-मंथन सत्र आयोजित करने पर सहयोग।
- विदेशी संगठनों/अकादमियों के साथ समझौता ज्ञापन करना।
- रा.कृ.वि.अ. का सहयोग दक्षिण-दक्षिण सहयोग, विशेष रूप से अफ्रीका के लिए को बढ़ावा देगा। इसमें और अधिक अध्येता होंगे तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित हो सकेंगे।

- किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण और प्रसार के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग।
- संयुक्त प्रकाशनों और सम्मेलनों को बढ़ावा देने के लिए कृषि अनुसंधान सहयोग हेतु एक तंत्र विकसित करना।
- भारत को अंतरराष्ट्रीय बैठकों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने में सहायता करना तथा वैशिक वैज्ञानिक जर्नलों में भारतीय प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करना।
- विशेष रूप से कृषि और खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में सीजीआईएआर और अंतरराष्ट्रीय संगठनों सहित विभिन्न संस्थानों और देशों के बीच सहयोग।
- नये विचारों का प्रभावी उपयोग करने के लिए नियमित रूप से चर्चा बैठकों का आयोजन।

रा.कृ.वि.अ./उद्योग/निवेशक सम्मेलन

कृषि अनुसंधान और विकास के क्षेत्रों में उद्योग जगत के खिलाड़ियों के साथ सहयोग और साझेदारी के लिए 20 अगस्त, 2023 को एक उद्योग/निवेशक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. के.एम. बुजरबरुआ ने की और सह-अध्यक्षता डॉ. ए.के. सिंह (उपाध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने की, जिसमें 16 उद्योगों ने भाग लिया।

सचिव द्वारा रा.कृ.वि.अ. गतिविधियों पर संक्षिप्त प्रस्तुति के बाद, उद्योग के प्रतिभागियों ने कृषि ऊर्जा बचत नीति, पीड़कनाशियों पर प्रतिबंध, डिजिटल कृषि, व्यावसायिक जोखिम शमन, पेटेंट तकनीकों का उपयोग आदि जैसे विभिन्न चिंताजनक मुद्दों को उठाया। नाबार्ड ने भी इसमें भाग लिया और अपने सहयोग और समर्थन के साधनों के क्षेत्र की पहचान की। अधिकांश उद्योगों ने कॉर्पोरेट अध्येता/सदस्य बनकर या अनुसंधान अनुदान/परामर्श आदि प्रदान करके अकादमी का समर्थन करने की इच्छा व्यक्त की।



विशेष व्याख्यान

प्रो. फ्रेडी अल्टपीटर (फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, यूएसए) ने 31 अगस्त, 2023 को "ऑयल केन की ओर: गन्ने की चयापचय अभियांत्रिकी और जीन संपादन के साथ जैव अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना" विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

रा.कृ.वि.आ.-कृषि समितियों के व्यावसायिक संघ की बैठक : नई पहल

अकादमी द्वारा दिनांक 26 सितंबर, 2023 को हाइब्रिड मोड में कृषि समितियों के व्यावसायिक संघ (पीएएस) की एक संवादात्मक बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.आ.) ने की। बैठक में 48 व्यावसायिक समितियों का प्रतिनिधित्व करने वाले 65 प्रतिभागी शामिल हुए। अपने उद्घाटन भाषण में, डॉ. पाठक ने पहल के उद्देश्य को स्पष्ट किया, रा.कृ.वि.आ. गतिविधियों में कृषि समितियों के व्यावसायिक संघ की अधिक भागीदारी और सोसायटी जर्नलों की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। भविष्य की कार्रवाई के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों की पहचान की गई:

- प्रतिवर्ष एक सामान्य मुख्य विषय का चयन किया जाना चाहिए, तथा इसे कार्यान्वित करने के लिए सभी व्यावसायिक सोसायटियों और अकादमी को मिलकर 1-2 सत्रों की मेजबानी या संयुक्त सम्मेलनों के आयोजन के लिए एक संयुक्त प्रस्ताव तैयार करना चाहिए।
- कुछ चुनी हुई व्यावसायिक सोसायटियों के एक या दो प्रतिनिधियों को आमंत्रित सदस्यों के रूप में रा.कृ.वि.आ. कार्यकारी परिषद की बैठकों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है।
- प्रकाशनों/दस्तावेजों के आदान-प्रदान और साझाकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न सोसायटियों की वेबसाइटों को हाइपरलिंक के माध्यम से आपस में जोड़ा जा सकता है।
- समितियां संयुक्त प्रकाशनों पर सहयोग कर सकती हैं, जिसमें पुस्तकें, नीति पत्र और अन्य ऐसे दस्तावेज शामिल हो सकते हैं।



- संचार को बढ़ाने और उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को साझा करने के लिए, एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाने का विचार प्रस्तावित किया गया। इस समूह में रा.कृ.वि.अ. के पदाधिकारी और प्रत्येक व्यावसायिक सोसायटी के 1–2 प्रतिनिधि शामिल किये जा सकते हैं।
- व्यावसायिक समितियों को विचार मर्थन सत्र या विशेषज्ञ बैठकों जैसी गतिविधियों के लिए अभिनव विचारों का प्रस्ताव देने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया जाता है और वे अपने सुझाव साझा करके अकादमी के साथ जुड़ सकते हैं। इसमें सहायता पहुंचाने के लिए अकादमी इस गतिविधि की देखरेख करने और अद्यतन जानकारी प्रदान करने के लिए अपने किसी पदाधिकारी को नियुक्त करेगी। जब भी राष्ट्रीय महत्व का कोई मामला सामने आए, तो सहायता के लिए रा.कृ.वि.अ. से संपर्क किया जा सकता है।
- अध्यक्ष ने उच्च रा.कृ.वि.अ. रेटिंग प्राप्त करने के लिए जर्नलों की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से अकादमी में सोसायटियों के साथ चर्चा करने का प्रस्ताव रखा।
- अकादमी 5–6 सदस्यों वाली एक समिति गठित करेगी, जिसमें रा.कृ.वि.अ. के कुछ स्थानीय पदाधिकारी तथा रा.कृ.वि.अ. द्वारा पहचाने गए अन्य सोसाइटियों के 2–3 प्रतिनिधि शामिल होंगे, जो अनुवर्ती कार्रवाई के लिए कार्य करेंगे।

अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष-2023 पर राष्ट्रीय संवाद

अकादमी द्वारा “सतत कृषि के लिए श्री अन्न को बढ़ावा देने हेतु भावी दिशा विकसित करने” पर एक राष्ट्रीय संवाद का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हिमांशु पाठक, अध्यक्ष (रा.कृ.वि.अ.) ने की। कार्यक्रम में डॉ. हिमांशु पाठक का संबोधन भी शामिल था जिसके पश्चात दो पैनल चर्चाएँ आयोजित हुईं। पहली पैनल चर्चा

का नेतृत्व डॉ. ए.के. सिंह (निदेशक, भा.कृ.अ.स.) ने किया जिसमें श्री अन्न उगाने वाले किसानों को प्रोत्साहित करने और उत्पादकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ. सिंह ने श्री अन्न को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी, बाजार पहलों और लाभप्रदता की भूमिका पर बल दिया। उन्होंने मध्याह्न भोजन और

तत्काल खाने योग्य / व्यजंनों सहित खाद्य प्रणालियों में श्री अन्न को मुख्यधारा में लाने पर भी चर्चा की। डॉ. सिंह ने 2047 में भारत के लिए एक दृष्टिकोण साझा किया, जिसमें पौष्टिक भोजन के अधिकार और छिपी हुई भूख के उन्मूलन पर प्रकाश डाला गया।



डॉ. तारा सत्यवती (निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—आईआईएमआर, हैदराबाद) के नेतृत्व में दूसरे पैनल चर्चा में कृषि –खाद्य उत्पादन प्रणाली में विविधता लाने, पोषण संबंधी विंताओं को दूर करने और श्री अन्न के लिए नए बाजारों की खोज पर ध्यान केंद्रित किया गया। उन्होंने पिछले 20 वर्षों में श्री अन्न की खपत में एक तिहाई कमी आने पर विंता व्यक्त की। इस प्रवृत्ति का मुकाबला करने के लिए उन्होंने श्री अन्न उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए खेती की विधियों, नीतियों, बाजारों और प्रौद्योगिकियों को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने का प्रस्ताव दिया। ग्लूटेन–मुक्त प्रकृति के कारण श्री अन्न को एक आशाजनक फसल के रूप में महत्व देते हुए, उन्होंने इष्टतम निवेश आपूर्ति और फसल प्रतिस्थापन के माध्यम से तनावग्रस्त पारिस्थितिकी में उत्पादकता बढ़ाने की कार्यनीतियों पर चर्चा की। डॉ. एम.एल जाट, (वैशिक अनुसंधान कार्यक्रम निदेशक, इक्रीसेट, हैदराबाद) ने उत्पादकता बढ़ाने और विस्तार के लिए उपयुक्त डोमेन की पहचान करने के महत्व पर बल देते हुए श्री अन्न को आर्थिक रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने पर बल दिया। प्रो. बलराज सिंह (कुलपति श्री करन नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर ने सूखा स्थितियों और ताप सहनशीलता से युक्त श्री अन्न की सुसंगत किस्मों को विकसित करने के लिए हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। डॉ. बी. दयाकर राव, (सीईओ (श्री अन्न), भा.कृ.अनु.प.—आईआईएमआर, हैदराबाद) ने श्री अन्न की साल भर की खपत को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. इजराइल ओलिवर किंग ईडी, (निदेशक – बायोडायवर्सिटी, एमएसएसआरएफ, चेन्नई) ने वैकल्पिक बीज प्रणालियों के विकास की वकालत करते हुये किसान–केन्द्रित कार्य के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों को शामिल करने पर बल दिया।

क्षेत्रीय चैप्टर

राष्ट्रीय और क्षेत्रीय महत्व के खाद्य और पोषण संबंधी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए क्षेत्रीय चैप्टरों द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये:

कार्यक्रम	दिनांक
बैंगलुरु	
भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय पशु पोषण एवं कार्यकी संस्थान (एनआईएएनपी), बैंगलुरु में जैव प्रौद्योगिकी एवं सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग, ईस्ट वेस्ट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज ऑफ साइंस, बैंगलुरु के छात्रों के लिए एक ज्ञानवर्धक भ्रमण का आयोजन किया गया।	12 मई, 2023
राघवेंद्र भट्ट द्वारा "उच्च शिक्षा के लिए कृषि विज्ञान और कैरियर विकल्प" पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया।	26 मई 2023

कार्यक्रम	दिनांक
रा.कृ.वि.अ. नीति पत्र 96 (कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से पशुधन सुधार) और 103 (रोगाणुरोधी प्रतिरोध) का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया गया।	जून 03, 2023
भा.कृ.अनु.प.—एनआईएएनपी में प्रोफेसर मोती लाल मदान द्वारा “परिवर्तनकारी कृषि: पोषण स्थिरता के लिए पशुधन” विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन	25 सितंबर, 2023
डॉ. के. गिरिधर, (प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.—एनआईएएनपी) द्वारा “कृषि और संबद्ध विज्ञान में आजीविका के अवसर” पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन	05 दिसंबर, 2023
भोपाल	
भा.कृ.अनु.प. भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान (आईआईएस.एस.) के सहयोग से कृषि शिक्षा दिवस मनाया गया।	04 दिसंबर, 2023
डॉ. एस.पी. दत्ता, (निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—आईआईएसएस भोपाल) द्वारा “मृदा और जल प्रबंधन की आवश्यकता” पर व्याख्यान का आयोजन।	04 दिसंबर, 2023
विश्व मृदा दिवस पर भा.कृ.अनु.प. —आईआईएसएस, भोपाल के कर्मचारियों और छात्रों द्वारा मार्च पास्ट का आयोजन।	05 दिसंबर, 2023
कोयम्बटूर	
भा.कृ.अनु.प.—गन्ना प्रजनन संस्थान (एसबीआई), कोयम्बटूर में “गन्ना परिदृश्य: अनुसंधान और उद्योग परिप्रेक्ष्य” पर विचार—मंथन सत्र	10 मई 2023
आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधन संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम	26 मई 2023
सेठियाथोप, तमिलनाडु के गन्ना किसानों को प्रभावित करने वाली क्राउन मीली बग और पोकका रोग की संयुक्त प्रकोप की नई घटना के प्रबंधन के लिए भा.कृ.अनु.प.—एसबीआई, कोयम्बटूर के सहयोग से एक जागरूकता कार्यक्रम।	30 जून 2023
पोषण एवं श्री अन्न उद्यमिता जागरूकता एवं प्रशिक्षण अभियान पर एक कार्यक्रम।	07 जुलाई 2023

कार्यक्रम	दिनांक
भा.कृ.अनु.प.—एसबीआई, कोयंबटूर और राष्ट्रीय जैविक विज्ञान अकादमी, चेन्नई के सहयोग से 'सतत कृषि के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग में रुझान' पर एक कार्यशाला।	29 नवंबर, 2023
कटक	
भा.कृ.अनु.प.:राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (एनआरआरआई), कटक में 'अम्लीय मृदाओं के सुधार के लिए औद्योगिक कचरे का उपयोग : वृत्ताकार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए कचरे से संपदा' पर विचार मंथन सत्र का आयोजन	10 अक्टूबर, 2023
विश्व मृदा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में किसानों, कृषक महिलाओं, वैज्ञानिकों और छात्रों सहित 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।	05 दिसंबर, 2023
हैदराबाद	
'समझौते से कार्रवाई तक: जैव विविधता का पुनर्निर्माण' विषय पर जैव विविधता के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस।	22 मई, 2023
विश्व दुर्घट दिवस की थीम है, "यह दर्शाना कि किस प्रकार डेयरी उत्पाद पर्यावरण के लिए हानिकारक है, साथ ही पौष्टिक भोजन और आजीविका भी प्रदान कर रहा है"।	01 जून 2023
वर्तमान परपोषी सीमा से परे सहजीवी नाइट्रोजन स्थिरीकरण को बढ़ाने में 'चुनौतियां' विषय पर विशेष ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन।	10 अगस्त, 2023
कृषि अनुसंधान केन्द्र, 'अंगारू', अनंतपुरम, आंध्र प्रदेश में किसानों के लिए 'एकीकृत फार्मिंग प्रणाली – जलवायु स्मार्ट शुष्क भूमि प्रौद्योगिकियां' विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण।	11–13 अगस्त, 2023
श्री अरविंदो ग्रामीण विकास संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), गद्दीपल्ली, सूर्यपेट जिला, तेलंगाना में अनुसूचित जाति के किसानों के लिए मिर्च में एकीकृत फसल प्रबंधन पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम	28–30 अगस्त, 2023
भारत के साथ सक्षम सहयोग और यूएसए में कृषि शिक्षा प्रणाली पर नीति संवाद का आयोजन	07 सितंबर, 2023
भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं प्रबंधन अकादमी में उद्यमिता विकास के क्षेत्र में छात्रों के बीच प्रतियोगिता सहित राष्ट्रीय स्तर का बी-फेस्ट।	22–23 सितंबर, 2023

कार्यक्रम	दिनांक
एसएआईआरडी केवीके, गद्दीपल्ली, तेलंगाना में श्री अन्नों के साथ मूल्य वर्धित उत्पाद विषय पर महिला कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन	07— 12 अक्टूबर, 2023
कृषि विज्ञान केंद्र, अमदलावलासा, श्रीकाकुलम जिला, आंध्र प्रदेश के सहयोग से 'उन्नत फसल प्रबंधन प्रौद्योगिकियां और श्री अन्न को मूल्य 'वर्धन' विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।	1—3 नवंबर, 2023
तेलकापल्ली मंडल के बोपल्ले गांव, नगरकुरनूल, तेलंगाना में किसान दिवस	23 दिसंबर, 2023
डॉ. राजीव के. वार्षणेय, रा.कृ.वि.अ. (विदेश सचिव) ने अनुसंधान और विकास में विज्ञान संचार की महत्वपूर्ण भूमिका पर व्याख्यान दिया।	04 जनवरी, 2024
रा.कृ.वि.अ. एसोसिएट्स की एक ऑनलाइन बैठक का आयोजन।	24 जनवरी, 2024
डॉ. संजय कुमार, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (एएसआरबी), नई दिल्ली द्वारा 'एएसआरबी : प्रतिभा की खोज में' विषय पर विशेष व्याख्यान 'विकसित भारत के लिए देशी प्रौद्योगिकी' मुख्य विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के दो कार्यक्रमों का आयोजन	17 फरवरी 2024
	28 फरवरी 2024
करनाल	
भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल के सहयोग से विचार मंथन सत्र का आयोजन	30 मई 2023
बाढ़ के बाद के परिदृश्य में भूमि संसाधनों के प्रबंधन के लिए कार्यनीतियों पर एक विशेषज्ञ परामर्श बैठक का आयोजन किया गया तथा एक परामर्शदात्री समिति गठित की गई।	29 अगस्त, 2023
व्यावसायिक विशेषज्ञों, राज्य सरकार के अधिकारियों और अन्य हितधारकों के परामर्श से भूमि उपयोग पर चर्चा करने और फसल संबंधी सिफारिशें विकसित करने के लिए विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया	06 सितंबर, 2023
कोलकाता	
राष्ट्रीय पोषण सप्ताह के अवसर पर रामकृष्ण मिशन आश्रम, सरगाछी, मुर्शिदाबाद में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।	12 सितंबर, 2023

कार्यक्रम	दिनांक
लखनऊ	
भा.कृ.अनु.प.—भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईआईएफएसआर), मोदीपुरम; भा.कृ.अनु.प.—आईआईएसआर, लखनऊ और कृषि एवं खाद्य के लिए टीईईबी — उत्तर प्रदेश के सहयोग से हितधारकों की परामर्श बैठक।	01 अगस्त, 2023
भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) और और भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (सीआईएसएच), लखनऊ के सहयोग से खाद्य और कृषि व्यवसाय त्वरण कार्यक्रम अर्थात् एफपीओ/कृषक—स्टार्ट अप सम्मिलन एवं एग्री उड़ान कॉफीराइट 6.0	08 अगस्त, 2023
भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के सहयोग से 'विश्व मृदा दिवस' का आयोजन	05 दिसंबर, 2023
डॉ. पी.वी. वारा प्रसाद, प्रोफेसर और निदेशक, सस्टेनेबल इंटेंसिटीफिकेशन इनोवेशन लेबोरेटरी, कंसास स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए द्वारा 'सतत कृषि के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता' पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन	08 दिसंबर, 2023
भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सहयोग से "गन्ने की खेती का यंत्रीकरण" पर एक सेमिनार का आयोजन	07 मार्च 2024
लुधियाना	
पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) के साथ 'गति प्रजनन' पर एक परिचर्चा कार्यशाला का आयोजन	20 फरवरी 2024
पुणे	
"कृषि अनुसंधान उत्पादकता को सशक्त बनाने के लिए व्यवहार में सृजनशील कृत्रिम बुद्धिमत्ता" पर ऑन लाइन/वर्चुअल मोड में सम्मेलन का आयोजन।	11–12 सितंबर 2023
मैरीलैंड ईस्टर्न शोर विश्वविद्यालय के खाद्य और कृषि विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. सदानंद ए ढेकनी द्वारा उन्नत लक्षणों के लिए विटिस के सटीक प्रजनन पर एक व्याख्यान	24 जनवरी, 2024
वाराणसी	
निवेदिता शिक्षा सदन बालिका इंटर कॉलेज, तुलसीपुर, महमूरगंज, वाराणसी में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और कृषि शिक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन	29 दिसंबर, 2023

क्षेत्रीय चैप्टरों की अतिविधियाँ

बैंगलुरु

- भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय पशु पोषण एवं कार्यकी संस्थान (एनआईएएनपी), और बैंगलुरु में 12 मई, 2023 को जैव प्रौद्योगिकी और सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग, ईस्ट वेर्स्ट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज ऑफ साइंस, बैंगलुरु के 30 एमएससी छात्रों के लिए एक एक्सपोजर भ्रमण का आयोजन किया गया तथा छात्रों को उच्च अध्ययन तथा आजीविका के अवसरों के लिए कृषि जैवप्रौद्योगिकी तथा सूक्ष्मजीवविज्ञान के महत्व के बारे में बताया गया।
- रा.कृ.वि.अ. नीति पत्र 96 (कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से पशुधन सुधार) और 103 (रोगाणुरोधी प्रतिरोध) कन्नड़ भाषा में जारी किए गए और 03 जून, 2023 को नई दिल्ली में क्षेत्रीय चैप्टरों के संयोजकों की बैठक के दौरान इनका विमोचन किया गया।
- निम्न विषयों पर अतिथि व्याख्यानों का आयोजन:
 - दिनांक 26 मई, 2023 को स्टैंडर्ड स्कूल, बैंगलोर (ग्रामीण) के छात्रों के लिए "उच्च शिक्षा और आजीविका विकल्प के लिए कृषि विज्ञान"।
 - भा.कृ.अनु.प.—एनआईएएनपी में 25 सितंबर 2023 को प्रो. मोती लाल मदान का "रूपांतरणशील कृषि : पोषणिक टिकाऊपन के लिए पशुधन"।
 - स्कूली छात्रों के लिए 05 दिसंबर, 2023 को "कृषि और संबद्ध विज्ञान में आजीविका के अवसर"।
 - श्री रामकृष्ण आश्रम, शिवनहल्ली, बंगलुरु के छात्रों के लिए 05 दिसम्बर 2023 को डॉ. के. गिरिधर, (प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.—एनआईएएनपी) का कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञानों में आजीविका के अवसर'।

भोपाल

स्कूल के छात्रों के साथ चर्चा

भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल के सहयोग से स्कूली छात्रों (50) को कृषि विज्ञान में आजीविका की संभावनाओं के बारे में जागरूक करने और उन्हें मानव अस्तित्व के लिए प्राकृतिक संसाधनों के महत्व और इन महत्वपूर्ण संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने के लिए कृषि शिक्षा दिवस मनाया गया। डॉ. एस.पी. दत्ता, (निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—आईआईएसएस भोपाल) ने 'मृदा और जल प्रबंधन की आवश्यकता' पर एक व्याख्यान भी दिया।

विश्व मृदा दिवस

विश्व मृदा दिवस के अवसर पर मानव जीवन में मिट्टी और पानी के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए भा.कृ.अनु.प.—आईआईएसएस, भोपाल के कर्मचारियों और छात्रों द्वारा

एक विशाल मार्च पास्ट 5 दिसंबर, 2023 को आयोजित किया गया। डॉ. अनिल के सिंह (उपाध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने व्याख्यान देते हुए मृदा की उच्च उत्पादकता के लिए जल के वैज्ञानिक उपयोग के महत्व पर बल दिया।

कोयम्बटूर

- भा.कृ.अनु.प.—गन्ना प्रजनन संस्थान (एसबीआई), कोयम्बटूर में 10.05.2023 को गन्ना परिदृश्य: अनुसंधान और उद्योग परिप्रेक्ष्य पर विचार—विमर्श सत्र आयोजित किया गया। भा.कृ.अनु.प. के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा ने उच्च जल—उपयोग और पोषक—उपयोग दक्षता वाली जलवायु समुत्थानशील किस्मों के विकास और जीन संपादन प्रौद्योगिकी के उपयोग पर बल दिया।
- आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 26 मई 2023 को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री आर. मणिकंदन, सह—समन्वयक, कोवई कुलंगल पथुकप्पु अमाइप्पु और जल शक्ति पुरस्कार विजेता, 2019 द्वारा ‘जल निकायों का पुनरोद्धार’ विषय पर एक वार्ता दी गई।
- सेठियाथोप, तमिलनाडु से आए गन्ने की खेती करने वाले किसानों को प्रभावित करने वाले क्राउन मीली बग और पोकका रोग के सम्मिलित प्रकोप की नई घटना के प्रबंधन के लिए भा.कृ.अ.प.—एसबीआई, कोयम्बटूर के सहयोग से 30 जून 2023 को एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- 07 जुलाई, 2023 को पोषण एवं श्री अन्न उद्यमिता जागरूकता एवं प्रशिक्षण अभियान पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- भा.कृ.अनु.प.—एसबीआई, कोयम्बटूर और नेशनल एकेडमी ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज, चेन्नई के सहयोग से 29 नवंबर, 2023 को हाइब्रिड मोड में “टिकाऊ कृषि के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग में रुझान” पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी सार्वजनिक संस्थानों और निजी क्षेत्र दोनों से थे।

कटक

- भा.कृ.अनु.प.—एनआरआरआई, कटक में 10 अक्टूबर, 2023 को “अम्लीय मृदा के सुधार के लिए औद्योगिक कचरे का उपयोग: वृत्ताकार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए कचरे से संपदा” पर विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया। इसमें भा.कृ.अनु.प., उद्योग, कृषि विज्ञान केन्द्रों, स्टार्ट अप्स, कृषि उत्पादक संगठन और ओडिशा सरकार के राज्य विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया और वे लाभान्वित हुए।

- दिनांक 05 दिसंबर 2023 को "विश्व मृदा दिवस" का आयोजन किया गया और किसानों, कृषक महिलाओं, वैज्ञानिकों और छात्रों सहित 80 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

हैदराबाद

- दिनांक 22 मई, 2023 को "समझौते से कार्रवाई तक: जैव विविधता का पुनर्निर्माण" विषय पर जैविक विविधता के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। इसमें डॉ. एन.के. कृष्ण कुमार, पूर्व उप महानिदेशक (बागवानी), भा.कृ.अनु.प. द्वारा 'गरीब किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिरता के लिए रेशम विविधता संरक्षण' पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 1 जून, 2023 को विश्व दुग्ध दिवस मनाया गया जिसका विषय था "यह दर्शाना कि डेयरी किस प्रकार अपने पर्यावरणीय पदचिह्न को कम कर रही है, साथ ही पौष्टिक खाद्य पदार्थ और आजीविका भी प्रदान कर रही है।" भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक एवं कुलपति डॉ. धीर सिंह द्वारा 'वैशिक खाद्य सुरक्षा : दूध और दूध उत्पादों की भूमिका' पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया गया।
- डॉ. मैत्रेयी दास गुप्ता, प्राध्यापक, कोलकाता विश्वविद्यालय द्वारा 10 अगस्त, 2023 को 'वर्तमान पोषक सीमा से परे सहजीवी नाइट्रोजन स्थिरीकरण के विस्तार में चुनौतियां' विषय पर एक विशेष ऑनलाइन व्याख्यान दिया गया।
- कृषि अनुसंधान केंद्र, (अंगारू), अनंतपुरम् आंध्र प्रदेश में 11 से 13 अगस्त 2023 तक किसानों के लिए "एकीकृत कृषि प्रणाली – जलवायु स्मार्ट शुष्क भूमि प्रौद्योगिकियां" विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कृषि क्षेत्र में उच्च शिक्षा के अवसरों, पोषण संवेदनशीलता और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर बीएससी (कृषि) छात्रों के लिए एक संवेदीकरण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।
- एसएआईआरडी कृषि विज्ञान केन्द्र, गद्दीपल्ली, सूर्यपेट जिला, तेलंगाना में 28–30 अगस्त 2023 के दौरान अनुसूचित जाति के किसानों के लिए मिर्च में एकीकृत फसल प्रबंधन पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।



- 'अमेरिका में कृषि शिक्षा प्रणाली और भारत के साथ संभावित सहयोग' विषय पर दिनांक 7 सितंबर, 2023 को हाइब्रिड मोड में नीति संवाद का आयोजन किया गया।
- भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं प्रबंधन अकादमी में 22 और 23 सितंबर, 2023 के दौरान उद्यमिता विकास के क्षेत्र में छात्रों के बीच प्रतियोगिता सहित राष्ट्रीय स्तर का बी—फेस्ट संकल्प 8.0 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को 1000 से अधिक संस्थानों से 9300 से अधिक पंजीकरणों के साथ प्रभावशाली प्रतिक्रिया मिली, जिसमें आठ अलग—अलग कार्यक्रमों में 200 से अधिक को अंतिम सूची में शामिल किया गया।
- एसएआईआरडी केवीके, गद्दीपल्ली, तेलंगाना में 7–12 अक्टूबर, 2023 को महिला सदस्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष 2023 की पूर्व संध्या पर "श्री अन्न के साथ मूल्यवर्धित उत्पाद" पर महिला कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, अमदलावलासा, श्रीकाकुलम जिला, आंध्र प्रदेश के सहयोग से 1–3 नवंबर, 2023 को श्रीकाकुलम जिले के किसानों के लिए "उन्नत फसल प्रबंधन प्रौद्योगिकियों और श्री अन्न के मूल्य वर्धन" पर एक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- तेलकापल्ली मंडल के बोपल्ले गांव नागरकुरनूल जिला, तेलंगाना में 23 दिसंबर, 2023 को "भविष्य की खेती : कृषि में नवाचार और टिकाऊपन" विषय पर ग्राम सरपंच के सहयोग से किसान दिवस मनाया गया।
- डॉ. राजीव के. वार्षेण्य, रा.कृ.वि.अ., विदेश सचिव ने आईआईएमआर, राजेन्द्र नगर, हैदराबाद में 4 जनवरी, 2024 को अनुसंधान एवं विकास में विज्ञान संचार की महत्वपूर्ण भूमिका पर व्याख्यान दिया। उन्हें रॉयल सोसाइटी की प्रतिष्ठित अध्येतावृत्ति प्राप्त करने के लिए भी सम्मानित किया गया।
- रा.कृ.वि.अ. एसोसिएट्स ॲफ हैदराबाद चैप्टर की ऑनलाइन बैठक 24 जनवरी, 2024 को आयोजित की गई। बैठक का उद्देश्य सामान्य रूप से रा.कृ.वि.अ. और विशेष रूप से रा.कृ.वि.अ.—क्षेत्रीय चैप्टर हैदराबाद का सबलीकरण था।

'उउसआरबी - प्रतिभा की खोज में' विषय पर विशेष व्याख्यान

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (एएसआरबी), नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ने 17 फरवरी, 2024 को हाइब्रिड मोड में 'एएसआरबी – प्रतिभा की खोज में' विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया।



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

चावल अनुसंधान संस्थान के सहयोग से 28 फरवरी, 2024 को 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस वर्ष एनएसडी का विषय 'विकसित भारत के लिए देशी था। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र तथा प्रतिभागी विद्यालयों को स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।



करनाल

- भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल के सहयोग से 30 मई, 2023 को एक विशेष विचार—मंथन सत्र का आयोजन किया गया।
- दिनांक 29 अगस्त, 2023 को एक विशेषज्ञ परामर्श बैठक का आयोजन किया गया और बाढ़ के बाद के परिदृश्य में भूमि संसाधनों के प्रबंधन के लिए कार्यनीतियों पर एक परामर्श तैयार किया गया।
- व्यावसायिक विशेषज्ञों, राज्य सरकार के अधिकारियों और अन्य हितधारकों के परामर्श से फसल संबंधी सिफारिशें तैयार करने और भूमि उपयोग पर चर्चा करने के लिए 6 सितंबर, 2023 को एक और विचार—मंथन सत्र आयोजित किया गया।
- रामकृष्ण मिशन आश्रम, सरगाची, मुर्शिदाबाद में 12 सितंबर, 2023 को राष्ट्रीय पोषण सप्ताह के अवसर पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों को संतुलित पोषण के बारे में जानकारी दी गई तथा उन्हें अपने घर पर उपलब्ध साधारण खाद्य पदार्थों से इसे प्राप्त करने के बारे में बताया गया। इससे दो स्थानीय विद्यालयों के लगभग 450 छात्र लाभान्वित हुए।
- जियागंज राजा बिजय सिंह विद्यामंदिर, जियागंज में छात्रों में जागरूकता पैदा करने के लिए 17 अक्टूबर, 2023 को 'मिट्टी बचाओ' अभियान का आयोजन किया गया।

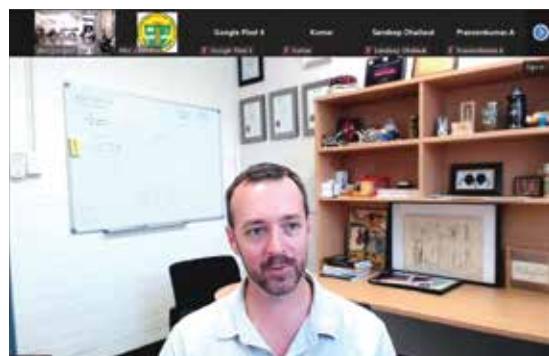
लखनऊ

- भा.कृ.अनु.प.— भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर), मोदीपुरम, भा. कृ.अनु.प.—भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और कृषि व खाद्य के लिए टीईईबी—उत्तर प्रदेश के सहयोग से 1 अगस्त, 2023 को एक हितधारक परामर्श बैठक आयोजित की गई। डॉ सलमान हुसैन, अध्यक्ष, प्रकृति इकाई की आर्थिकी और समन्वयक टीईईबी, यूएनईपी ने मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य भाषण दिया (वर्चुअल)।
- एफपीओ / किसान — स्टार्ट—अप विसर्जन सह कृषि उड़ानो 6.0, एक खाद्य एवं कृषि व्यवसाय त्वरक कार्यक्रम रोड शो 08 अगस्त 2023 को भा.कृ.अनु.प.—आईआईएसआर और भा.कृ.अनु.प.—सीआईएसएच, लखनऊ के सहयोग से लखनऊ में आयोजित किया गया।
- भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के सहयोग से 5 दिसंबर 2023 को 'विश्व मृदा दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. के.एन. तिवारी (सलाहकार इफको) ने व्याख्यान दिया।
- डॉ. पी.वी. वारा प्रसाद, प्रतिष्ठित प्रोफेसर और निदेशक— सतत गहनता नवाचार प्रयोगशाला, कंसास स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने 8 दिसंबर, 2023 को सतत कृषि के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया।
- भा.कृ.अनु.प.—आईआईएसआर, लखनऊ और शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसटीएआई) के सहयोग से 7 मार्च, 2024 को "गन्ने की खेती का यंत्रीकरण" विषय पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें वैज्ञानिकों, टेक्नोक्रेट, किसानों और उद्योग प्रतिनिधियों सहित 200 से अधिक विशेषज्ञों ने भाग लिया। श्री संजय सिंह गंगवार (सदस्य, उत्तर प्रदेश विधानसभा) मुख्य अतिथि थे और उन्होंने गन्ना किसानों को सशक्त बनाने में यंत्रीकरण और आधुनिकीकरण के महत्व पर बल दिया, जो भारत की विकास यात्रा के लिए आवश्यक है।



लुधियाना

- पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) के साथ 'गति प्रजनन' पर एक परिचर्चा कार्यशाला का आयोजन दिनांक 20 फरवरी, 2024 को किया गया। डॉ. ए.एस. धत्त (अवर निदेशक, अनुसंधान, पीएयू) ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की, जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में कवींसलैंड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया के प्रो. ली हिकी शामिल थे। प्रो. हिकी ने फसल प्रजनन कार्यक्रमों को बढ़ाने के लिए गति प्रजनन की वकालत की और साथ ही प्रोटोकॉल विकास और जीनोमिक तकनीकों के साथ एकीकरण पर जोर दिया।



पुणे

भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे और सोसायटी फार एडवांसमेंट ऑफ विटिकल्चर एंड एनोलॉजी के सहयोग से : (1) 11–12 सितंबर, 2023 को ऑनलाइन/वर्चुअल मोड में "कृषि अनुसंधान उत्पादकता को सशक्त बनाने के लिए व्यवहार में सृजनशील कृत्रिम बुद्धिमत्ता" पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया और (2) 24 जनवरी, 2024 को डॉ. सदाननंद ए ढेकने, प्राध्यापक, खाद्य और कृषि विज्ञान विभाग, मैरीलैंड ईस्टर्न शोर विश्वविद्यालय द्वारा 'उन्नत लक्षणों के लिए विटिस के सटीक प्रजनन' पर व्याख्यान दिया गया।

वाराणसी

- भा.कृ.अनु.प.—भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के सहयोग से श्री कृष्ण इंटरमीडिएट कॉलेज, बहोरनपुर, बभनियाव, वाराणसी में एक दिवसीय 'कृषि विज्ञान में प्रगति पर जागरूकता कार्यक्रम' आयोजित किया गया ताकि कृषि शिक्षा के दायरे के बारे में जानकारी दी जा सके, कृषि में वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि विकसित की जा सके और हमारे दैनिक आहार में सब्जियों के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाई जा सके।

- निवेदिता शिक्षा सदन बालिका इंटर कॉलेज, तुलसीपुर, महमूरगंज, वाराणसी में 29 दिसंबर, 2023 को जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और कृषि शिक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। ‘दैनिक जीवन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव’ विषय पर अमरुद के पौधे लगाने के साथ-साथ निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम से लगभग 1100 छात्राएं लाभान्वित हुईं।

सम्पर्क

राष्ट्रीय

अकादमी अपने अधिकांश कार्यक्रमों को भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य अनुसंधान संगठनों/स्वयं सेवी संगठनों के माध्यम से क्रियान्वित करती है, जिनके साथ इसके मजबूत संबंध हैं। इन संगठनों में कार्यरत इसके अध्येताओं द्वारा इन संबंधों को पोषित और मजबूत किया जाता है। अकादमी ने भारत की विज्ञान अकादमियों, जैसे कि भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए), भारतीय विज्ञान अकादमी, भारत; भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी; राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद; और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के बीच संबंध स्थापित करने की पहल में भी भाग लिया, ताकि निम्न मुद्दों को हल किया जा सके: (क) देश में विज्ञान की बेहतर सार्वजनिक समझ, और (ख) देश के सामने आने वाले उनअग्रणी मुद्दों की पहचान की जा सके, जिनमें विज्ञान और वैज्ञानिकों की हिस्सेदारी है।

अंतरराष्ट्रीय

अकादमी द्वारा विश्व खाद्य पुरस्कार फाउंडेशन के साथ सहयोग किया और 17 अक्टूबर, 2023 को ‘खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए श्री अन्न’ अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष का उत्सव’ शीर्षक से एक आभासी कार्यशाला का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया।

अकादमी ने अकादमी में उनकी भागीदारी बढ़ाने और अकादमी की गतिविधियों को मजबूत करने के लिए उनके अनुभव और विशेषज्ञता का उपयोग करने के लिए 20 मार्च, 2024 और 22 मार्च, 2024 को विदेशी और प्रवासी अध्येताओं के साथ दो परिचर्चा बैठकें आयोजित कीं।

संस्थागत सदस्यता

अकादमी के उद्देश्यों से जुड़ी गतिविधियों में शामिल संस्थान, विभिन्न गतिविधियों के लिए दीर्घकालिक समर्थन के लिए रा.कृ.वि.अ. कॉप्रेस निधि में 10 लाख रुपये का योगदान देकर अकादमी के संस्थागत सदस्य बनने के पात्र हैं। दिनांक 31 मार्च, 2024 तक 38 संस्थागत सदस्य शामिल किए जा चुके हैं।

उत्कृष्टता की सम्मान देवा

नई अध्यैतावृत्ति

भाग I : फसल विज्ञान

डॉ. आदित्य प्रताप

प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुधार प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.
—भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कल्याणपुर,
कानपुर, उत्तर प्रदेश

डॉ. एस.एल. कृष्णमूर्ति

वरिष्ठ वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन), फसल सुधार
प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—केंद्रीय मृदा लवणता
अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा

डॉ. मगंती शेषु माधव

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—केंद्रीय तंबाकू अनुसंधान
संस्थान, भास्कर नगर, राजामुंदरी, आंध्र प्रदेश

डॉ. ज्ञान प्रकाश मिश्र

अध्यक्ष, मृदा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रभाग, भा.
कृ.अनु.प.—भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई
दिल्ली

डॉ. तपन कुमार मंडल

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय पादप जैव
प्रौद्योगिकी संस्थान, पूसा, नई दिल्ली

डॉ. मूलपुरी सुजाता

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.— भारतीय तिलहन
अनुसंधान संस्थान, राजेंद्रनगर, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

भाग II : बाणवानी विज्ञान

डॉ. सुरेश कुमार परमशिवम

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.— राष्ट्रीय केला
अनुसंधान केंद्र, तिरुचिरापल्ली, तमில்நாடு

डॉ. राजेश कुमार

प्रधान वैज्ञानिक, सब्जी विकास प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.
—भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, पोस्ट ऑफिस
जखिनी (सहासाहपुर), वाराणसी, उत्तर प्रदेश

डॉ. राकेश सिंह

प्रधान वैज्ञानिक, जीनोमिक संसाधन प्रभाग, भा.
कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन
ब्यूरो, नई दिल्ली

भाग III : पशु विज्ञान

डॉ. यशपाल सिंह मलिक

डीन, पशु जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, गडवासु,
लुधियाना, पंजाब

डॉ. बिमलेश मान

सहायक महानिदेशक, शिक्षा प्रभाग, भारतीय कृषि
विज्ञान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन, एबी II,
नई दिल्ली

डॉ. नारायण एच. मोहन

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.— राष्ट्रीय सूअर
अनुसंधान केंद्र, रानी, गुवाहाटी, असम

प्रो. अशोक कुमार मोहन्ती

संयुक्त निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय पशु
चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर परिसर,
जिला नैनीताल, उत्तराखण्ड

भाग IV : मत्स्य विज्ञान

डॉ. बिजय कुमार बेहरा

अधिष्ठाता, मात्स्यिकी महाविद्यालय, रानी लक्ष्मी
बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश

डॉ. उत्तम कुमार सरकार

भा.कृ.अनु.प.— मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

भाग-V : प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

डॉ. संजीव कुमार बेहरा

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.— भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, नवीबाग, भोपाल, मध्य प्रदेश

डॉ. पूजा खरे

प्रधान वैज्ञानिक, फसल उत्पादन एवं संरक्षण प्रभाग, सीएसआईआर—केंद्रीय औषधीय एवं सगंधीय पादप संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

डॉ. सुनील कुमार

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. राजीव अरविंद मराठे

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, केगांव, सोलापुर, महाराष्ट्र

डॉ. संजय सिंह राठौर

प्रधान वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

भाग VI : पादप सुरक्षा विज्ञान

डॉ. ज्ञानेश्वर मधुकर फिराके,

वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि कीटविज्ञान), भा.कृ.अनु.प.—पुष्पविज्ञान अनुसंधान निदेशालय, केशवनगर, पुणे, महाराष्ट्र

डॉ. थंगावेलु रमन

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.— राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु

डॉ. अमलराज रमेश सुंदर

प्रधान वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान अनुभाग, फसल संरक्षण प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर, तमिलनाडु

प्रो. बिरिची कुमार सरमा

प्रध्यापक, कवक विज्ञान एवं पादप रोगविज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भाग-VII : कृषि अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी

प्रो. चंद्रनाथ चटर्जी

प्रध्यापक, कृषि और खाद्य अभियांत्रिकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल

डॉ. एम.आर. मणिकांतन

प्रधान वैज्ञानिक, पीबी एवं पीएचटी प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड, करेल

भाग-VIII : सामाजिक विज्ञान

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

डॉ. गिरीश कुमार झा

प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. प्रबीना कुमार मेहर

वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.— भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, लाइब्रेरी एवेन्यू, नई दिल्ली

विदेशी अध्येता

डॉ. ताकाशी यामानो

प्रधान अर्थशास्त्री, एशियाई विकास बैंक,
मंडलुयोंग सिटी, 1550 मेट्रो मनीला, फिलीपींस

प्रवासी अध्येता

प्रो. पी.वी. वारा प्रसाद

प्रतिष्ठित प्राध्यापक, कैनसस स्टेट यूनिवर्सिटी,
मैनहट्टन, यूएसए

डॉ. हरबंस सिंह बरियाणा

एडजंक्ट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ साइंसेज, वेस्टर्नⁿ
सिडनी यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया

डॉ. शिव ओम पराशर

प्रतिष्ठित जेम्स मैकगिल प्रोफेसर, जैव संसाधन
इंजीनियरिंग विभाग, मैकिगल विश्वविद्यालय,
मैकडोनाल्ड कैम्पस, कनाडा

उत्सोखितशिप

भाग-I : फसल विज्ञान

डॉ. हरिता बोल्लिनेडी

वैज्ञानिक – वरिष्ठ वेतनमान, आनुवंशिकी प्रभाग,
भा.कृ.अनु.प.– भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान,
पूसा परिसर, नई दिल्ली

डॉ. राजकुमार उत्तमराव जुंजारे

वैज्ञानिक – वरिष्ठ वेतनमान, मक्का आनुवंशिकी
इकाई, आनुवंशिकी प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय
कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

भाग-II : बागवानी विज्ञान

डॉ. तनुजा बक्सेथ

वैज्ञानिक–वरिष्ठ वेतनमान, फसल सुधार एवं
बीज प्रौद्योगिकी प्रभाग, भाकृअनुप–केंद्रीय आलू
अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश

भाग-III : पशु विज्ञान

डॉ. ए. अरुण प्रिंस मिल्टन

वैज्ञानिक – वरिष्ठ वेतनमान, पशु और मात्रियकी
विज्ञान प्रभाग, पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए भा.कृ.अनु.प.
अनुसंधान परिसर, उमियम, मेघालय

डॉ. जेस वर्गीस

सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा सार्वजनिक
स्वास्थ्य विभाग, पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान
महाविद्यालय, पूकोडे, लक्कीडी पी.ओ., वायनाड,
केरल

भाग-IV : मात्रियकी विज्ञान

डॉ. फिरोस खान एस

वैज्ञानिक – वरिष्ठ वेतनमान, जलीय कृषि
उत्पादन और पर्यावरण प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.–
केंद्रीय मीठाजल जलीय कृषि संस्थान,
कौशल्यागंगा, भुवनेश्वर, ओडिशा

भाग-V : प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

डॉ. विजय पूनिया

वरिष्ठ वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.–
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. असीम दत्ता

वरिष्ठ वैज्ञानिक, मृदा एवं फसल प्रबंधन प्रभाग,
भा.कृ.अनु.प.—केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान
संस्थान, करनाल, हरियाणा

भाग VI : पादप सुरक्षा विज्ञान

डॉ. टोटन अदक

वरिष्ठ वैज्ञानिक, फसल सुरक्षा प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.
—राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक, ओडिशा

डॉ. सुशील कुमार शर्मा

वैज्ञानिक, पादप विषाणु विज्ञान केंद्र, पादप
रोग विज्ञान प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय कृषि
अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

भाग VII : कृषि अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी

डॉ. शांतनु बसाक

वरिष्ठ वैज्ञानिक, रासायनिक एवं जैव—रासायनिक
प्रसंस्करण प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.—राष्ट्रीय प्राकृतिक
रेशा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान,
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

भाग VIII : सामाजिक विज्ञान

डॉ. सुरेश कुमार

वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप—केंद्रीय मृदा लवणता
अनुसंधान संस्थान, करनाल

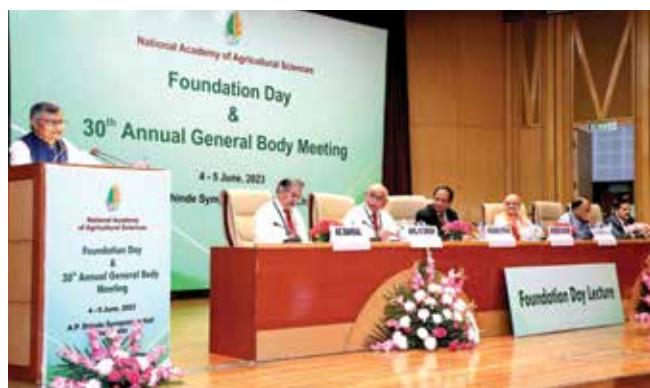
वर्ष 2024 के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

पुरस्कार का नाम	पुरस्कार विजेता का नाम
फसल विज्ञान	डॉ. कुलदीप त्रिपाठी
बागवानी विज्ञान	डॉ. मंजूनाथ गौड़ा डीसी
मत्स्य विज्ञान	डॉ. अरिसेकर यू
प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	डॉ. चौतन्य प्रसाद नाथ
पादप सुरक्षा विज्ञान	डॉ. राहुल कुमार तिवारी
कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी	डॉ. आदिनाथ एकनाथ काटे
सामाजिक विज्ञान	डॉ. नीरज बुधलाकोटी

स्थापना दिवस और महासभा की वार्षिक बैठक

स्थापना दिवस समारोह

स्थापना दिवस व्याख्यान 5 जून, 2023 को नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री बी.वी.आर. सुब्रह्मण्यम (आईएएस) द्वारा दिया गया। अपने व्याख्यान के दौरान, उन्होंने कृषि के क्षेत्र में भारत की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और इस बात पर बल दिया कि कैसे ये प्रगति भारत के कृषि में वैशिक नेतृत्व के रूप में परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। श्री सुब्रह्मण्यम ने आकर्षक आंकड़े प्रस्तुत किए, जो दर्शाते हैं कि भारत में दुनिया की आधी आवादी को भोजन कराने की क्षमता है और उन्होंने राष्ट्र की समृद्धि के लिए कृषि क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री सुब्रह्मण्यम ने आगे आने वाली चुनौतियों को भी संबोधित किया और मत्स्य पालन तथा पशुपालन जैसे मुद्दों से निपटने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने बताया कि इन क्षेत्रों में बेहतर लाभ के लिए विशेष ध्यान देने और अभिनव समाधानों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कृषि क्षेत्र में अनुसंधान की एक गतिशील प्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया। उनके व्याख्यान में भारत की कृषि उपलब्धियों, खाद्य उत्पादन में वैशिक नेता के रूप में इसकी क्षमता तथा इस क्षेत्र में सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदमों के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि के साथ एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान किया गया।



आयोग के विशिष्ट सदस्य और मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में कृषि की भूमिका पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि साझा की।

उन्होंने जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए टिकाऊ विधियों, अधिक उत्पादकता और बेहतर बाजार पहुंच की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। प्रो. चंद ने प्रौद्योगिकीय प्रगति और रोजगार सृजन के बीच संतुलन की आवश्यकता को

स्वीकार किया। उन्होंने विनिर्माण क्षेत्रों को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया जिनसे उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

अध्यक्षीय अभिभाषण

डॉ. हिमांशु पाठक, अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ. और सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. ने फेलोशिप को संबोधित करते हुए अकादमी के समक्ष चुनौतियों और वर्तमान मुद्दों को संबोधित करने के लिए 2023 में अपने कार्यक्रमों पर फिर से विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि अकादमी प्रत्येक वर्ष विशेष प्रासंगिकता वाले एक विशिष्ट विषय की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित कर सकती है, जैसे कि वर्ष 2023 में थीम के रूप में श्री अन्न को मुख्यधारा में लाने के अवसर और चुनौतियाँ, और समग्र रूप से विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया। उन्होंने कृषि विज्ञान कांग्रेस को द्विवार्षिक के बजाय वार्षिक रूप से आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। अकादमी को वर्तमान मुद्दों पर प्रकाशनों को अधिक बार करने के लिए अपनी गतिविधियों को नया रूप देना चाहिए, और हर साल 1 जनवरी को जारी होने वाले “भारतीय कृषि की स्थिति” पर एक संक्षिप्त प्रकाशन लाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा गुणवत्तापूर्ण प्रकाशनों के लिए अन्य वैज्ञानिक पत्रिकाओं और वैज्ञानिक अकादमियों के साथ घनिष्ठ संबंध और सक्रिय सहयोग को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाना चाहिए।



इसी तरह, ‘रा.कृ.वि.अ.’ और ‘पास’ के बीच सहयोग को बढ़ाने की आवश्यकता है, और अकादमी को फेलोशिप, इंटर्नशिप और उन्नत प्रयोगशालाओं के दौरे के माध्यम से अधिक छात्रों को आकर्षित और प्रोत्साहित करना चाहिए। यह बांधित है कि अकादमी प्रतिष्ठित प्रिंट, सोशल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ अपने संबंधों को बढ़ाए, ताकि व्यापक समुदाय को महत्वपूर्ण विज्ञान समर्थित विचारों, अवधारणाओं और नीतिगत मुद्दों से अवगत कराया जा सके। शिक्षकों, उद्योग भागीदारों और अन्य हितधारकों सहित व्यापक समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित किए जाने चाहिए।

अकादमी को समय और संसाधनों की बचत करने तथा जर्नल रेटिंग सहित प्रणाली को अधिक कुशल बनाने के लिए ऑनलाइन प्रसंस्करण के माध्यम से अधिकांश गतिविधियों, पत्राचार और प्रकाशनों को

बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रतिष्ठित वैज्ञानिक समुदाय के बीच संचार को बेहतर बनाने और पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया के उपयोग की भी सिफारिश की। अध्यक्ष ने अकादमी को मजबूत बनाने और इसके कार्य को और बेहतर बनाने के लिए संसाधन जुटाने के लिए प्रतिष्ठित अध्येताओं से सुझाव आमंत्रित किए।

आमसभा की 30वीं वार्षिक बैठक के कार्यवृत्त के कुछ अंश

रा.कृ.वि.अ. के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक की अध्यक्षता में 5 जून 2023 को पूर्वाह्न 9.30 बजे हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई।

रा.कृ.वि.अ. के नौ सम्मानित अध्येताओं, डॉ. योगेंद्र अलघ, डॉ. चितरंजन भाटिया, डॉ. देवकीनन्दन कामरा, डॉ. अजय कुमार परिधा, डॉ. निपेंद्र कुमार रॉय, डॉ. राजेंद्र नाथ साहनी, डॉ. बी.एन. सिंह, डॉ. कीर्ति सिंह और डॉ. डी.पी. रे शासी निकाय की पिछली के बाद दिवंगत हो गये हैं, जिनके सम्मान में कुछ समय का मौन रखा गया।

रा.कृ.वि.अ. के सचिव डॉ. डब्ल्यू.एस. लाकड़ा ने अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक, हाल ही में सेवानिवृत्त हुये अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सभी पदाधिकारियों और कार्यकारी समिति के सदस्यों तथा वार्षिक आमसभा की बैठक में भाग लेने वाले सभी सम्मानित अध्येताओं का स्वागत किया। अकादमी के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक ने आम सभा की वार्षिक बैठक में उपस्थित सभी सम्मानित अध्येताओं तथा नवनिर्वाचित अध्येताओं और एसोसिएट्स का भी हार्दिक स्वागत किया।

इसके बाद सचिव प्रो. के.सी. बंसल ने सूचीबद्ध कार्यसूची प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने बताया कि अकादमी ने वर्ष के दौरान सभी निर्धारित बैठकें और प्रतिबद्ध गतिविधियाँ आयोजित कीं, जिनमें 11 विचार-मंथन सत्र, कई कार्यनीतिपरक कार्यशालाएँ, परामर्श बैठकें और गोलमेज चर्चाएँ शामिल थीं। उन्होंने यह भी बताया कि 2022 में 2 विदेशी अध्येताओं और 3 प्रवासी अध्येताओं सहित 34 नए अध्येता शामिल किए गए और 10 एसोसिएट्स चुने गए, जिससे 1 जनवरी 2023 तक अध्येता की कुल संख्या 760 और एसोसिएट्स की कुल संख्या 114 हो गई।

आम सभा को बताया गया कि अकादमी ने वर्ष के दौरान 4 कार्यनीति पत्र (सं. 15 से 18), 14 नीति पत्र (सं. 107 से 120) और 2 नीति सार (सं. 12 और 13) तथा रा.कृ.वि.अ. न्यूज के 4 अंक प्रकाशित किए। रा.कृ.वि.अ. की आधिकारिक पत्रिका 'एग्रीकल्चरल रिसर्च' के सभी 4 अंक स्प्रिंगर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की मदद से समय पर छापे गए। जैसा कि कार्यकारी समिति की बैठक में निर्णय लिया गया था, 4 जून, 2023 को नव-निर्वाचित अध्येताओं द्वारा प्रस्तुतियों के स्थान पर दो पैनल चर्चाएँ आयोजित की गईं, जिनका विषय था 'अमृत काल 2047 के लिए कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की भावी दिशा' और "कृषि में उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों का सशक्तिकरण'। इस वर्ष का रथापना दिवस व्याख्यान श्री बीवीआर सुब्रह्मण्यम,

आईएएस, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, नीति आयोग द्वारा दिया गया और इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर रमेश चंद, माननीय सदस्य, नीति आयोग ने भी व्याख्यान दिया।

दिनांक 1 व 5 जुलाई 2022 को विदेशी और प्रवासी अध्येताओं के साथ दो बैठकें आयोजित की गईं। दिनांक 22 मई 2022 को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के उपलक्ष्य में ‘सतत कृषि के लिए वैश्विक जीनबैंक और जैव विविधता प्रबंधन’ शीर्षक का एक सत्र आयोजित किया गया और 15 सितंबर 2022 को “खाद्य और कृषि के लिए पादप आनुवंशिक संसाधनों का अंतरराष्ट्रीय शासन : अंतर्राष्ट्रीय पादप संधि की भूमिका और स्थान” विषय पर श्री केंट नादोजी, अंतर्राष्ट्रीय संधि के सचिव, खाद्य एवं कृषि संगठन, रोम ने विशेष व्याख्यान दिया।

नव निर्वाचित अध्येता और एसोसिएट्स को अकादमी में प्रवेश दिया गया और युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके बाद पद्म पुरस्कार विजेता अध्येता डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. बख्शी राम और डॉ. एम.वी. गुप्ता; दो उत्कृष्ट किसान श्री सुल्तान सिंह और श्री भारत भूषण को सम्मानित किया गया; दो विशिष्ट औद्योगिक प्रतिनिधियों श्री राजू बरवाले और डॉ. एम. रामासामी; दो उल्लेखनीय मीडियाकर्मी, श्री हरीश दामोदरन और डॉ. ओपी यादव; और तीन रा.कृ.वि.अ. अध्येताओं, प्रो. राजीव के. वार्षणेय, डॉ. अब्देलबागी एम. इस्माइल और डॉ. उमा शंकर सिंह को भी सम्मानित किया गया जिन्हें अति उच्च स्तर के अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस 10 से 13 अक्टूबर, 2023 तक भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्रिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि में आयोजित की गई। कांग्रेस का विषय ‘सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कृषि –खाद्य प्रणालियों का रूपांतरण’ था। इस कांग्रेस में अध्येताओं को कांग्रेस में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

अध्येताओं और उसोसिएट्स का प्रवेश

अकादमी के सचिव डॉ. डब्ल्यू.एस. लाकड़ा, ने वर्ष 2023 के दौरान नव निर्वाचित अध्येताओं और एसोसिएट्स के औपचारिक प्रवेश समारोह का संचालन किया। अनुभागीय समितियों के संबंधित संयोजकों ने अध्येताओं के प्रशस्ति पत्र पढ़े। इसके बाद, अध्यक्ष ने उन्हें अकादमी की फेलोशिप में शामिल किया और विभिन्न वर्गों के तहत प्रमाण पत्र प्रदान किए।

16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस

अकादमी ने 10–13 अक्टूबर, 2023 तक केंद्रीय समुद्री मात्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) कोच्चि, भारत के सहयोग से “सतत विकास लक्ष्यों के लिए कृषि –खाद्य प्रणालियों में रूपांतरण पर 16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया। भारत और विदेशों से 1,600 से अधिक प्रतिनिधियों



को एक साथ लाकर, कांग्रेस ने विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, किसानों, नीति निर्माताओं और उद्योग के नेतृत्व को सार्थक बातचीत में शामिल होने और कृषि क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए अभिनव समाधान तलाशने के लिए एक जीवंत मंच प्रदान किया।

भारत सरकार के मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री माननीय श्री परषोत्तम रूपाला ने 16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बढ़ती हुई कृषि-खाद्य प्रणालियों को वैज्ञानिक नवाचारों के माध्यम से टिकाऊ उद्यमों में बदलने की तत्काल आवश्यकता है। खाद्यान्न मांग, पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा की गई। उन्होंने आगे कहा कि भारत की कृषि का भविष्य काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि संचित वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावसायिक सफलता में कैसे रूपांतरित किया जा सकता है।

कृषि एवं शिक्षा विभाग (डेयर) के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने अध्यक्षीय भाषण दिया। डॉ. पाठक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा, जिसमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने, भूख को खत्म करने तथा सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भविष्य की रूपरेखा तैयार करके उत्पादकता वृद्धि हासिल करने पर बल दिया गया। उन्होंने आगे अनुमान लगाया कि 2033 तक भारत की खाद्यान्न मांग बढ़कर 340–355 मीट्रिक टन हो जाएगी। जीनोमिक्स तथा जीनोम एडिटिंग पर अनुसंधान कृषि तथा उन वस्तुओं में तकनीकी सफलताओं के लिए मुख्य ध्यान देना होगा, जहां पारंपरिक प्रजनन से वांछित परिणाम नहीं मिल पाते।

कृषि विज्ञान कांग्रेस के दौरान विचार-विमर्श के कुछ महत्वपूर्ण परिणाम नीचे सूचीबद्ध हैं:

आहार विविधता और पोषण साक्षरता को बढ़ावा : व्यक्तियों को अपने आहार में दालों, फलों, सब्जियों और पशु-आधारित उत्पादों जैसे खाद्य पदार्थों की विस्तृत श्रृंखला को शामिल करके विविधता लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त, पोषण साक्षरता बढ़ाने के लिए शैक्षिक पहलों में निवेश हो, और यह भी सुनिश्चित हो कि लोग इष्टतम स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार लेने के महत्व को समझें।

खाद्य प्रसंस्करण की पारंपरिक विधियों का उपयोग : पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों और पादप-रसायनों को संरक्षित करने में पारंपरिक खाद्य प्रसंस्करण तकनीकों के महत्व पर बल दिया जाना चाहिए। इन विधियों के माध्यम से पोषक तत्वों को कम करके, भोजन के पोषण मूल्य को बढ़ाया जा सकता है, जिससे पोषण सुरक्षा में सुधार हो सकता है।

कृषि में युवाओं को सशक्तिकरण : राष्ट्रीय पोषण मिशन में प्रतिभागिता को बढ़ाने के लिए कृषि में रत युवाओं को अवसर और प्रोत्साहन उपलब्ध कराये जाने चाहिए। युवाओं को कृषि को आजीविकावृत्ति अपनाने के लिए सशक्ति करने हेतु अंतरविषयी दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है, ताकि छुपी हुई भूख और खाद्य सुरक्षा जैसे मुद्दों से निपटा जा सके।

उन्नत जैव प्रौद्योगिकियों में निवेश : CRISPR& Cas जीनोम एडिटिंग जैसी उन्नत जैव प्रौद्योगिकी के अनुसंधान और विकास के लिए संसाधन आवंटित होने चाहिए। ये प्रौद्योगिकियां फसल के लक्षणों में सुधार, उपज बढ़ाने और टिकाऊ तरीके से कृषि चुनौतियों का समाधान करने के लिए संभावित समाधान प्रदान करती हैं।

पशुधन और कुकुट पोषण पर ध्यान : पशुधन और कुकुट उत्पादों की पोषण गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए फीड और चारा सुरक्षा पर केंद्रित राष्ट्रीय मिशन स्थापित होने चाहिए। पशुपालन की विधियों में पोषण को प्राथमिकता देकर, उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन स्रोतों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है, जिससे खाद्य सुरक्षा में सुधार हो सकता है।

बागवानी नवाचार को प्राथमिकता : खाद्य प्रणालियों के टिकाऊपन में रूपांतरित करने के प्रयासों में बागवानी फसलों पर बल दिया जाना चाहिए उत्पादन और सस्योत्तर प्रबंधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने सहित बागवानी में नवाचार को बढ़ावा देकर, पौष्टिक फलों और सब्जियों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

जल और मृदा प्रबंधन कार्यनीतियों का कार्यान्वयन : कृषि में सतत जल और मृदा प्रबंधन के लिए कार्यनीतियों को विकसित करने उच्चे लागू किया जाना चाहिए। संरक्षण विधियों के माध्यम जल उत्पादकता में वृद्धि और मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर कृषि प्रणालियाँ को जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक समुद्धानशील और ऊर्जावान बनाया जा सकता है।

कृषि के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्मों का सशक्तिकरण : कृषि में डेटा प्रबंधन, निर्णय समर्थन और ज्ञान प्रसार के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म को बेहतर बनाना होगा। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, किसान अपनी कृषि पद्धतियों में उत्पादकता, टिकाऊपन और समुत्थानशीलता बढ़ाने के लिए सूचना और संसाधनों तक पहुँच सकते हैं।

लैंगिक समावेशिता और कौशल विकास का प्रवर्धन : लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा देने और कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, युवाओं के लिए कौशल विकास पहलों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनमें जो वांछित ज्ञान व विशेषज्ञता है, उसका कृषि के क्षेत्र में प्रभावी योगदान प्राप्त हो सके।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा : कृषि में अनुसंधान, शिक्षा और विकास में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए साझेदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वैश्विक स्तर पर ज्ञान, संसाधन और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करके, आम चुनौतियों का समाधान करने और खाद्य सुरक्षा और पोषण से संबंधित साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर विश्व के देश काम कर सकते हैं।

प्रकाशन

अकादमी ने वर्ष के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए:



नीति दस्तावेज़ (पीपी)

पीपी 119 : द्वितीयक कृषि : चुनौतियाँ, अवसर और भावी दिशा

पीपी 120 : नवीन कृषि विस्तार मॉडल का विस्तार

पीपी 121 : खाद्य तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता

पीपी 122 : मूल्य समर्थन और सब्सिडी से परे

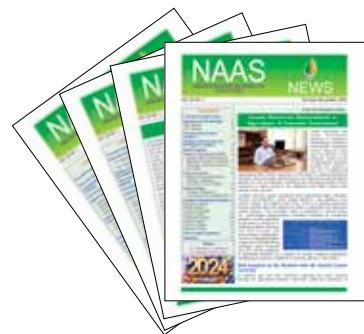
पीपी 123 : पशुधन पर कोविड-19 का प्रभाव (पशु स्वास्थ्य और डेयरी / कुकुट पालन / मांस / चारा उद्योग)

पीपी 124 : भारत में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से कृषि-बुनियादी ढांचे और कृषि-व्यवसाय विकास को बढ़ाना

पीपी 125 : भारतीय मात्रियकी पालन क्षेत्र के लिए खाद्य सुरक्षा कार्यनीतियाँ

संवादपत्र

संवादपत्र, खंड 23, संख्या 2 से 4 और खंड 24, अंक 1
(त्रैमासिक)

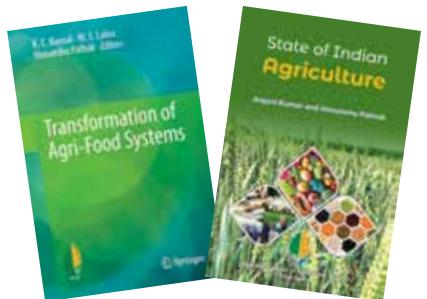


जर्नल (स्थिर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित)

रा.कृ.वि.अ. आधिकारिक जर्नल 'एग्रीकल्चर रिसर्च' खंड 12, अंक 2 से 4 और खंड 13 अंक 1 (त्रैमासिक)

पुस्तकें

1. ट्रांसफार्मेशन ऑफ एग्री-फूड सिस्टम्स
2. स्टेट ऑफ इंडियन एग्रीकल्चर



कार्यक्रम और बैठकें

नववर्ष मिलन समारोह

अकादमी के अध्येताओं और एसोसिएट्स का मिलन समारोह 1 जनवरी, 2024 को हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया। आरंभ में, डॉ. डब्ल्यू.एस. लाकडा (सचिव) ने डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष);



पूर्व अध्यक्षों डॉ. आरबी सिंह और डॉ. टी. महापात्र; सभी पदाधिकारियों और सभी सम्मानित अध्येताओं और एसोसिएट्स का स्वागत किया। उन्होंने नए उपाध्यक्ष के रूप में डॉ. पी.के. जोशी और नए सचिव के रूप में डॉ. अशोक के. सिंह का स्वागत करके नेतृत्व परिवर्तन को भी स्वीकार किया तथा डॉ. राकेश के. जैन को नया संपादक नियुक्त किया गया, साथ ही अकादमी के नए कार्यकारी परिषद सदस्यों की भी नियुक्ति की गई। निवर्तमान सदस्यों को अकादमी में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए धन्यवाद दिया गया।

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) ने 2023 के दौरान अकादमी की उपलब्धियों पर विचार करते हुए, जिसमें अध्येतावृत्ति को सम्मान, सहयोग और 16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस के सफल आयोजन का उल्लेख किया गया तथा उन्होंने अध्येताओं का स्वागत करते हुए सभी को नव वर्ष 2024 की शुभकामनाएँ दीं। नई पहलों जैसे ऑनलाइन नामांकनों, जर्नल स्कोरिंग और छात्र सम्पर्क कार्यक्रमों जैसी नई पहलों पर चर्चा की गई, साथ ही सरकार द्वारा निधि बंद करने के बाद वित्तीय स्थिरता के लिए कार्यनीतियों पर भी चर्चा की गई। अकादमी द्वारा अपनी वैश्विक उपस्थिति और प्रभाव को बढ़ाने के उद्देश्य से मीडिया आउटरिच में वृद्धि के साथ—साथ विदेशी अकादमियों के साथ—साथ सहयोग पर भी चर्चा हुई। वर्ष 2047 तक कृषि नवाचारों के लिए भावी दिशा विकसित करने के उद्देश्य से नीति वकालत, नई प्रौद्योगिकियों के अनुकूलन और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के साथ संरेखण के महत्व को रेखांकित किया गया।

जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से निपटने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। अगले प्रमुख कदमों में अतिरिक्त बजटीय संसाधन जुटाना, कृषि शिक्षा सुधारों को प्राथमिकता देना, भारत की वैश्विक भूख सूचकांक रैंकिंग को संबोधित करना और परिभाषित कार्यों और जवाबदेही के साथ कार्य योजनाओं के लिए कार्यान्वयन मार्ग प्रशस्त करना जैसे प्रमुख चरण शामिल हैं।



अकादमी ने स्थापना दिवस व्याख्यान के माध्यम से डॉ. स्वामीनाथन को याद करने, छात्रों के लाभ के लिए व्याख्यानों की रिकॉर्डिंग करने, विश्वविद्यालयों में सहायक संकाय के रूप में इच्छुक अध्येताओं को शामिल करने और कृषि जागरूकता बढ़ाने के लिए पत्रकारों के साथ कार्यशालाओं का आयोजन किये जाने जैसी पहलों का भी प्रस्ताव रखा।

क्षेत्रीय चैप्टर के संयोजकों की बैठकें

क्षेत्रीय चैप्टरों के संयोजकों की एक बैठक 3 जून, 2023 को डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई, जिसमें उनकी गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा की गई। संयोजकों ने चैप्टरों की गतिविधियों और भविष्य की योजनाओं का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया।

क्षेत्रीय चैप्टरों के संयोजकों की एक और बैठक 22 दिसंबर, 2023 को वर्चुअल मोड में डॉ. हिमांशु पाठक, अध्यक्ष (रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें 2023 के दौरान आयोजित गतिविधियों की समीक्षा की गई और वर्ष 2024 के लिए योजनाओं की रूपरेखा तैयार की गई।



डॉ. पाठक ने वर्ष 2023 के दौरान क्षेत्रीय चैप्टरों के सराहनीय प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने उन्हें भावी दिशा पर चलने और वर्ष 2024 के लिए योजनाओं को लागू करने के बारे में भी संक्षेप में बताया। अध्यक्ष ने सभी संयोजकों से डिजिटल कृषि की थीम के अनुरूप अपने—अपने क्षेत्रों में गतिविधियों की व्यवस्था करने का आग्रह किया। इसके अतिरिक्त, चैप्टरों को अपने—अपने क्षेत्रों में व्यावसायिक सोसायटियों के साथ सहयोग बढ़ाने की सलाह दी गई। इसके बाद, अध्यक्ष ने इस पहल के सफल संचालन के लिए सुझाव आमंत्रित किए।

कार्यकारी परिषद की बैठकें

वर्ष 2023–24 के दौरान, कार्यकारी परिषद की छह बैठकें ऑनलाइन या हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। बैठकों के दौरान विचार किए गए कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे और की गई कार्रवाई इस प्रकार थी:

131वीं बैठक

रा.कृ.वि.अ. कार्यकारी परिषद की 131वीं बैठक दिनांक 29 अप्रैल, 2023 को डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई।

अध्यक्ष ने शिक्षकों, छात्रों, किसानों, उद्योग प्रतिनिधियों और मीडिया के साथ घनिष्ठ संपर्क के साथ अकादमी की गतिविधियों को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि इसका क्षेत्र व्यापक हो और इसकी दृश्यता बढ़े। यह निर्णय लिया गया कि अब से स्थापना दिवस समारोह के दौरान नए शामिल किए गए अध्येताओं की प्रस्तुतियों के स्थान पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर पैनल चर्चाएं आयोजित की जाएंगी। दिनांक 04 जून, 2023 को आयोजित पैनल चर्चाएँ इस प्रकार थीं:

1. अमृत काल – 2047 के लिए कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की भावी दिशा
2. कृषि में उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों का सशक्तिकरण

एक प्रगतिशील किसान, राज्य कृषि विश्वविद्यालय, प्रतिनिधि (आईएयूए के अध्यक्ष) और उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्ति को कार्यकारी समिति की बैठकों में विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में आमंत्रित करने का प्रस्ताव किया गया, जिनके पास मतदान का अधिकार नहीं होगा। यह भी निर्णय लिया गया कि रा.कृ.वि.अ. को (i) भारतीय कृषि की स्थिति और (ii) अमृत काल में भारतीय कृषि : भावी दिशा पर प्रकाशन निकालने चाहिए। इसके अलावा, नए बदलावों को लागू करने के लिए नियमों और उप-नियमों में संभावित बदलावों की व्यवहार्यता और तौर-तरीकों पर विचार-विमर्श करने के लिए डॉ. अनिल कौ. सिंह (उपाध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई।

132वीं बैठक

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता 3 जून, 2023 को में हाइब्रिड मोड में कार्यकारी परिषद की 132वीं बैठक आयोजित की गई। 16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस की तैयारियों की समीक्षा के बाद, अकादमी के उद्देश्यों और उपनियमों में बदलाव की समीक्षा करने और सुझाव देने तथा अध्येता को शामिल करने के लिए नई श्रेणियां और मानदंड शुरू करने के लिए डॉ. ए.कौ. सिंह की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों प्रस्तुत की गई और उन पर विचार-विमर्श किया गया। यह निर्णय लिया गया कि सुझाए गए बदलावों को अनुमोदन के लिए आम सभा के समक्ष रखा जाएगा।

इसके अतिरिक्त, यह निर्णय लिया गया कि दो प्रकाशनों (i) भारतीय कृषि की स्थिति और (ii) अमृत काल: भावी दिशा, भारतीय कृषि की स्थिति पर वार्षिक रूप से प्रकाशित होने वाली पुस्तक प्रत्यक वर्ष 1 जनवरी को विमोचन किया जाएगा। डॉ. अंजनी कुमार और डॉ. पी.कौ. जोशी को क्रमशः इन दस्तावेजों को विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके बाद, सचिव और कोषाध्यक्ष ने अनुमोदन के लिए आम सभा के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट और प्रस्तावों की रूपरेखा तैयार की। कार्यकारी समिति को नए कार्यकारी निदेशक और संपादकीय प्रबंधक की नियुक्तियों के बारे में सूचित किया गया।

133वीं बैठक

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में कार्यकारी परिषद की 133 वीं बैठक 16 सितंबर, 2023 को हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। बैठक के दौरान चर्चा किए गए कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे इस प्रकार हैं:

- (क) भारतीय कृषि की स्थिति और (ख) 'अमृत काल में भारतीय कृषि: भावी दिशा' के प्रकाशन में हुई प्रगति
- शिक्षकों, उद्योग जगत के अग्रणियों और नवोन्मेषी किसानों को प्रस्तावित अध्येतावृत्ति के लिए अकादमी के उद्देश्यों, उपनियमों की समीक्षा और पुनरीक्षण किया गया। यह निर्णय लिया गया कि रा.कृ.वि.अ. अध्येतावृत्ति प्रदान करने की मौजूदा प्रक्रिया जारी रहेगी।
- अकादमी के लिए विभिन्न स्रोतों से राजस्व सृजन पर अद्यतन जानकारी
- वर्ष 2024 के लिए अकादमी अध्येता/एसोसिएट्स और युवा वैज्ञानिक पुरस्कारों को अंतिम रूप देने के लिए अनुभागीय समितियों की सिफारिशों पर विचार और चयन प्रक्रिया में और सुधार के लिए सुझाव
- अध्येतावृत्ति से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर 2024 के पदाधिकारियों और कार्यकारी परिषद के सदस्यों के चुनाव के लिए पैनल तैयार करना।

भा.कृ.अनु.प.—सीएमएफआरआई, कोच्चि के निदेशक डॉ. ए. गोपालकृष्णन और 16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस के संयोजक सचिव ने लॉजिस्टिक तैयारियों और बजटीय विचारों पर अद्यतन जानकारी दी।

अध्यक्ष ने परिषद को बताया कि अकादमी की पत्रिका 'एग्रीकल्वर रिसर्च' ने 1.4 का अंतरराष्ट्रीय प्रभाव कारक प्राप्त किया है, जिसके परिणामस्वरूप रा.कृ.वि.अ. स्कोर 7.4 है, जिसके लिए उन्होंने प्रधान संपादक डॉ. अनुपम वर्मा और उनकी टीम को बधाई दी।

134वीं बैठक

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में 10 अक्टूबर, 2023 को आयोजित कार्यकारी परिषद की 134वीं बैठक हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। संक्षिप्त स्वागत के बाद, डॉ. डब्ल्यू. एस. लाकड़ा (सचिव, रा.कृ.वि.अ.) ने 28 सितंबर, 2023 को भारतीय कृषि के असाधारण व्यवित्रित और अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष प्रोफेसर एमएस स्वामीनाथन के दुःखद निधन के बारे में जानकारी दी और उनके सम्मान के तौर पर एक मिनट का मौन रखा गया। इसके बाद, कार्यकारी परिषद द्वारा कार्यसूची मद पर विचार—विमर्श किया गया। बैठक के दौरान उभरे कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार थे:

- (i) अमृत काल में भारतीय कृषि : भावी दिशा और (ii) भारतीय कृषि की स्थिति प्रकाशनों की स्थिति की अद्यतन जानकारी।
- अकादमी के लिए विभिन्न स्रोतों से राजस्व सृजन पर अद्यतन जानकारी। 2024 के दौरान विचार—विमर्श के लिए "डिजिटल कृषि" विषय।
- प्रोफेसर एमएस स्वामीनाथन के सम्मान में अकादमी का एक पुरस्कार की स्थापना।

135वीं बैठक

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता में कार्यकारी परिषद की 135 वीं बैठक 8 दिसंबर, 2023 को हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। डॉ. पाठक ने सीएमएफआरआई, कोच्चि में 16वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस (एएससी) के सफल आयोजन पर अध्येताओं और कार्यक्रम को स्थानीय आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कार्यक्रम समिति के सदस्यों को अच्छी तरह से संरचित समावेशी तकनीकी विचार-विमर्श सुनिश्चित करने के लिए संयोजन समितियों की सराहना की, जिन्होंने लॉजिस्टिक सहायता प्रदान करने के लिए अथक प्रयास किया। दिनांक 1 जनवरी, 2024 से चुने गए नए पदाधिकारियों और कार्यकारी परिषद के सदस्यों को स्वीकृति प्रदान की गई (बॉक्स देखें)।

डॉ. अशोक कुमार सिंह के सचिव के रूप में नामांकन से उत्पन्न कार्यकारी परिषद सदस्य की रिक्ति को 31 दिसंबर, 2023 के बाद आकस्मिक रिक्ति के रूप में संबोधित किया जाएगा।

1.	उपाध्यक्ष	डॉ. प्रमोद कुमार जोशी
2.	सचिव	डॉ. अशोक कुमार सिंह
3.	संपादक	डॉ. राकेश कुमार जैन
4.	सदस्य (4)	<p>प्रो. विश्वनाथ चक्रवर्ती</p> <p>डॉ. (सुश्री) पगड़ाला दामोदरम कमला जयंती</p> <p>डॉ. (सुश्री) मीनाक्षी प्रसाद</p> <p>डॉ. ओम प्रकाश यादव</p>

136वीं बैठक

डॉ. हिमांशु पाठक (अध्यक्ष, रा.कृ.वि.अ.) की अध्यक्षता कार्यकारी परिषद की 136वीं बैठक 16 मार्च, 2024 को हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। संक्षिप्त स्वागत के बाद, कार्यकारी परिषद द्वारा कार्यसूची मदों पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक के दौरान उभरे कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार थे:

- भारतीय कृषि से संबंधित दो प्रकाशनों नामतः डॉ. अंजनी कुमार और डॉ. हिमांशु पाठक द्वारा लिखित “स्टेट ऑफ इंडियन एग्रीकल्चर” और डॉ. पी.के. जोशी द्वारा लिखित “इंडियन एग्रीकल्चर इन अमृत काल: द रोड मैप” पर अद्यतन जानकारी।
- जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर को 2025 में आयोजित होने वाली 17वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस के आयोजन स्थल के रूप में अंतिम रूप दिया जाना।
- आगामी कार्यक्रमों पर अद्यतन जानकारी, जैसे ‘रा.कृ.वि.अ.’ व ‘पास’ संबंध, प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन स्थापना दिवस व्याख्यान, तथा कृषि पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रम।

- सामाजिक विज्ञान अनुभाग के अलावा, जैव सूचना विज्ञान विषय को अन्य संबंधित अनुभागों में भी स्थान मिलेगा। इसके अलावा, 2025 के लिए अध्येता/एसोसिएट्स और युवा वैज्ञानिक पुरस्कारों के चुनाव के लिए अनुभागीय समितियों का गठन किया गया।
- रा.कृ.वि.अ. क्षेत्रीय चैप्टरों के लिए विभिन्न संयोजकों को अंतिम रूप देना, साथ ही कानूनी मामलों और अकादमी द्वारा प्राप्त वित्तीय अनुदानों पर अद्यतन जानकारी देना।



अतिरिक्त पुरस्कारों के प्रस्ताव, विश्व खाद्य पुरस्कार फाउंडेशन जैसे बाह्य संगठनों के साथ सहयोग, तथा विभिन्न कार्यशालाओं और प्रकाशनों की प्रगति की समीक्षा की गई।

विशेष आमंत्रितों, नामांकन प्रक्रियाओं, आगामी वर्चुअल बैठकों, सुविधा उन्नयन और अंतर-अकादमी और उद्योग बैठकों सहित भविष्य के कार्यक्रमों की योजनाओं पर सामान्य अद्यतन जानकारी परिषद के सदस्यों के साथ साझा किए गए।

बैठक का समापन लाकड़ा (सचिव, रा.कृ.वि.अ.) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी सदस्यों के प्रति उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए आभार व्यक्त किया।

जर्नल स्कोर समिति

गैर-प्रभाव कारक वैज्ञानिक पत्रिकाओं को रा.कृ.वि.अ. स्कोर प्रदान करने के लिए मूल्यांकन प्रपत्र को अंतिम रूप देने हेतु अकादमी द्वारा अध्यक्ष (रा.कृ.वि.अ.) की स्वीकृति से जर्नल स्कोर समिति (2023–25) का गठन किया गया था। समिति ने डॉ. अनिल के. सिंह को अध्यक्ष और डॉ. डब्ल्यू. एस. लाकड़ा को सदस्य सचिव नियुक्त किया, इसके पश्चात स्कोर कार्ड को अंतिम रूप देने के लिए विस्तार से चर्चा हुई और इसे रा.कृ.वि.अ. स्कोर 2024–26 के लिए जर्नल मूल्यांकन हेतु आवेदन आमंत्रित करने के लिए इसे प्रसारित किया गया।

अब तक सभी वर्गों की 3208 जर्नल रा.कृ.वि.अ. जर्नल स्कोर डेटाबेस में हैं। 690 गैर-प्रभाव कारक जर्नलों में से, रा.कृ.वि.अ. स्कोर 2024–26 के लिए अकादमी में जर्नल मूल्यांकन के लिए 388 आवेदन प्राप्त हुए। रा.कृ.वि.अ. स्कोर 1 जनवरी, 2024 को वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है, जो 31 दिसंबर, 2026 तक वैध रहेगा।

वर्ष 2024 के लिए नियोजित कार्यक्रम

विचारमंथन सत्र	संयोजक
भारतीय मसालों की वैशिक फुटप्रिंट बढ़ाने के लिए कार्यनीतियाँ और नीति डिजाइन	डॉ. दुरैसामी प्रसाथ
स्मार्ट पशु कृषि: 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की ओर परिप्रेक्ष्य योजना	डॉ. वाई.एस. मलिक
कौशिकीय मछली मांस उत्पादन: संभावनाएँ और चुनौतियाँ	डॉ. सीएन रविशंकर, डॉ. ए. गोपालकृष्णन
पोषण और स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए कम उपयोग किए जाने वाले वन्य फल और सब्जियाँ: नीतिगत परिप्रेक्ष्य	डॉ. टी.के बेहरा
जलीय आनुवंशिक संसाधनों का जलवायु अनुकूलनशील संरक्षण	डॉ. यू.के. सरकार
कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सूचना प्रौद्योगिकी	डॉ. राजेंद्र प्रसाद
कृषि में एग्रीवोल्टेक्स	डॉ. ए.के. सिक्का और पी. संतरा
भारतीय कृषि के लिए अनुसंधान में निवेश बढ़ाना	डॉ. पी.एस. बरथल
कृषि निर्यात को बढ़ावा: संभावनाएँ और चुनौतियाँ	डॉ. नवीन पी. सिंह
कार्यनीतिपरक कार्यशालाएं	संयोजक
फसल सुरक्षा समाधान: समूह एम.आर.एल. एवं कीटनाशकों का गौण उपयोग	डॉ. पी.के. चक्रवर्ती
भारत में मक्का से इथेनॉल तकरू संभावनाएं और कार्यनीतियाँ	डॉ. एच.एस. जाट
कार्बन खेती	डॉ. बिस्वपति मंडल और डॉ. वी.के. सहगल आईएआरआई
जल सुरक्षा: मुद्दा मात्रा का है या प्रबंधन का?	डॉ. अनिल के. सिंह और डॉ. के. पलानीसामी
नैनो उर्वरक	डॉ. वीके. सिंह और डॉ. एस.एस. राठौर

वित्तीय विवरण

अकादमी को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर), नई दिल्ली से वर्ष 2023–24 के दौरान 62 लाख रुपए की अनुदान सहायता प्राप्त हुई है। अकादमी के खातों की लेखापरीक्षा महा सभा की स्वीकृति से नियुक्त सनदी लेखाकार द्वारा किया जाता है। वर्ष 2023–24 के लिए उपयोगिता प्रमाण—पत्र कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग को प्रस्तुत कर दिया गया है। वर्ष 2023–24 के लिए लेखापरीक्षित लेखा विवरण और लेखा परीक्षक की रिपोर्ट का सार अनुलग्नक I और II के रूप में संलग्न है।

आभार झापन

अकादमी, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) के प्रति उनके निरंतर वित्तीय एवं लॉजिस्टिक सहायता के लिए आभार व्यक्त करती है। अकादमी अन्य संगठनों द्वारा लॉजिस्टिक के संदर्भ में प्रदान किए गए सहयोग एवं सहायता को भी दर्ज करती है। अकादमी की प्रकाशन गतिविधियां मुख्य रूप से इसके प्रधान संपादक, संपादकों, सह संपादकों, सलाहकार मंडल, रा.कृ.वि.अ. पदाधिकारियों एवं कार्यकारी परिषद के सदस्यों, बड़ी संख्या में समीक्षकों (जो पांडुलिपियों की जांच करते हैं तथा उन पर टिप्पणियां एवं सुझाव प्रदान करते हैं) की स्वैच्छिक एवं मानद सेवाओं के कारण हैं। सम्मानित अध्येता अकादमी की विभिन्न गतिविधियों जैसे वार्षिक महा सभा की बैठक, अनुसंधान जर्नलों का स्कोर निर्धारित करने, नई अध्येतावृत्ति और अकादमी पुरस्कारों के लिए नामांकनों की आलोचनात्मक जांच, कृषि विज्ञान कांग्रेस, विचार—मंथन सत्र, कार्यनीतिपरक कार्यशालाएं, संगोष्ठियां तथा सार्वजनिक व्याख्यान, अंतःक्रिया बैठकें आदि पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए भी अपनी सेवाएं देते हैं। अकादमी वर्ष के दौरान उपरोक्त गतिविधियों में शामिल अध्येतावृत्ति एवं रा.कृ.वि.अ. सचिवालय के कर्मचारियों की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त करती है।

लेखापरीक्षक रिपोर्ट



पवन शुभम एंड कंपनी
सनदी लेखाकार

601, रुद्र स्टॉवर, 7, डिस्ट्रिक्ट सेंटर,
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
सम्पर्क : 011-45108755
ई-मेल : pawan@pawanshubham.com

लेखापरीक्षक की स्वतंत्र रिपोर्ट

सेवा में,

सदस्य

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी

एनएएससी परिसर, डीपीएस मार्ग, पूसा,
नई दिल्ली-110012

हमने राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (इसके पश्चात इसे 'अकादमी' कहा जाएगा), नई दिल्ली की 31 मार्च 2024 तक के तुलना-पत्र और तिथि को समाप्त हुए वर्ष के आय एवं व्यय के लेखों, पावतियों तथा अदायगियों के विवरण तथा उपरोक्त तिथि को समाप्त हुए वर्ष के लिए अनुबंधित टिप्पणियों (इसके पश्चात इन्हें 'वित्तीय विवरण' कहा जाएगा) की लेखापरीक्षा की है।

वित्तीय विवरणों के लिए प्रबंधन का उत्तरदायित्व

प्रबंधन इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए उत्तरदायी है। इस उत्तरदायित्व में अकादमी की परिसम्पत्तियों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त लेखाकरण रिकॉर्डों का रखरखाव करना शामिल है, ताकि धोखा-धड़ी और अन्य अनियमितताओं को ज्ञात किया जा सके; उचित नीतियों का चयन और उपयोग हो सके; ऐसे वित्तीय विवरण तैयार करने और प्रस्तुतीकरण हेतु संबंधित लेखाकरण रिकॉर्डों की परिशुद्धता एवं पूर्णतः सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त आंतरिक नियंत्रण बनाए रखा जा सके जिससे सच्ची और ईमानदार स्थिति स्पष्ट होती हो तथा जो वास्तविक गलत विवरण से मुक्त हो तथा उसमें धोखा-धड़ी या त्रुटि की कोई गुंजाइश न हो।

लेखापरीक्षक का उत्तरदायित्व

हमारा उत्तरदायित्व हमारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर अपने विचार व्यक्त करना है। हमने भारत के सनदी लेखाकारों द्वारा जारी किए गए लेखापरीक्षा पर निर्धारित मानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। मानकों में यह अपेक्षा की गई है कि हम नैतिक वांछित निर्देशों का अनुपालन करें तथा इस बारे में वास्तविक सुनिश्चितता प्राप्त करने हेतु लेखापरीक्षा नियोजित व निष्पादित करें कि वित्तीय विवरण किसी भी गलत प्रकार के विवरण से मुक्त हैं।





पवन शुभम एंड कंपनी
सनदी लेखाकार

601, रूट्स टॉवर, 7, डिस्ट्रिक्ट सैंटर,

लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

सम्पर्क : 011-45108755

ई-मेल : pawan@pawanshubham.com

लेखापरीक्षा में वे निष्पादन क्रियाविधियां शामिल हैं जिनसे वित्तीय विवरणों में उल्लिखित राशियों और किए गए खुलासों के बारे में लेखापरीक्षा संबंधी प्रमाण प्राप्त किए जाते हैं। चुनी गई क्रियाविधियां लेखापरीक्षक के निर्णय पर निर्भर करती हैं जिनमें वित्तीय विवरणों की गलत विवरण वाली सामग्री के जोखिमों का मूल्यांकन शामिल है, भले ही ऐसा किसी धोखा-धड़ी के कारण हुआ हो या त्रुटि के कारण हुआ हो। जोखिम मूल्यांकन करते समय लेखापरीक्षक को उन वित्तीय विवरणों को अकादमी की तैयारी से संबंधित आंतरिक नियंत्रण प्रणाली पर विचार करना चाहिए जो एक सच्चा और ईमानदारीपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। किसी लेखापरीक्षा में प्रबंधन द्वारा किए गए लेखाकरण संबंधी आकलनों की तर्कसंगतता तथा लेखाकरण की नीतियों का औचित्य भी शामिल है और इसके साथ ही वित्तीय विवरणों के सकल प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल है।

हमें विश्वास है कि हमने लेखापरीक्षा संबंधी जो प्रमाण प्राप्त किया है वह हमारे लेखापरीक्षा संबंधी विचार को आधार उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त और उचित है।

विचार

हमारे विचार तथा हमारी सर्वश्रेष्ठ सूचना और हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार अनुबंधित दस्तावेजों तथा लेखे पर दी गई टिप्पणियों के कथित विवरण निम्न मामलों में सत्य और ईमानदारीपूर्ण दृष्टिकोण से युक्त होने चाहिए :

- क. तुलन-पत्र के मामले में, मामलों की स्थिति 31 मार्च 2024 है।
- ख. आय तथा व्यय लेखे के मामले में उक्त तिथि को समाप्त हुए वर्ष में आय से अधिक व्यय का लेखा रखा जाना चाहिए।
- ग. पावतियों तथा अदायगी लेखों के मामले में उक्त तिथि को समाप्त वर्ष के लिए पावतियों तथा अदायगियों का विवरण होना चाहिए।

कृते पवन शुभम एंड कंपनी

सनदी लेखाकार

आईसीएआई फर्म पंजीकरण सं.: 011573सी

(सीए पवन कुमार अग्रवाल)

साझेदार

एम. सं. 092345

यूडीआईएन: 24092345बीकेसीआईईवी9667

स्थान: नई दिल्ली

दिनांक: 28.05.2024





पवन शुभम एंड कंपनी
सनदी लेखाकार

601, रुट्स टॉवर, 7, डिस्ट्रिक्ट सेंटर,

लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

सम्पर्क : 011-45108755

ई-मेल : pawan@pawanshubham.com

लेखों पर टिप्पणियां

1. वित्तीय विवरण तैयार करने का आधार

वित्तीय विवरण वर्तमान निर्देशों पर ऐतिहासिक लागत परिवर्तन के अंतर्गत तैयार किए गए हैं जो सामान्यतः लेखाकरण सिद्धांतों के अनुसार हैं तथा भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा जारी किए गए अधिदेशित लेखाकरण मानकों के अनुसार हैं।

2. आय और व्यय की मान्यता

राजस्व / आय को समयानुसार तब वास्तविक आधार पर लेखाकृत किया गया है जब वे सामान्य रूप से स्वीकार्य लेखाकरण के सिद्धांतों के अनुसार अर्जित किए गए हैं।

3. निवेश

क) अकादमी ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 11(5) के अंतर्गत वांछित निवेशों के अनुसार निवेश किए हैं तथा निवेशों का मूल्य लागत के रूप में दर्शाया गया है।

ख) निवेशों से हुई आय को वास्तविक आधार पर मान्यता प्रदान की गई है।

4. अचल परिस्थितियां एवं मूल्य द्वास

अचल सम्पत्तियों को आयकर अधिनियम, 1961 जिसे बनाए गए अन्य नियमों के साथ पढ़ा जाना चाहिए, में उपलब्ध कराई गई मूल्यद्वास की दरों के अनुसार बट्टे खाते में डाले गए मूल्य में से गणना किए गए मूल्यद्वास को घटाकर निर्धारित किया गया है।

5. आयकर संबंधी प्रावधान एवं आकस्मिक देयताएं

आयकर विभाग द्वारा कर संबंधी निम्न मांग की गई जिसके लिए अकादमी ने सीआईटी (ए), दिल्ली के समक्ष अपील दायर की है। प्रबंधन का यह विचार है कि कोई भी अतिरिक्त कर नहीं बनता है, इसलिए कोई प्रावधान नहीं किया गया है।

क्र.सं.	वित्तीय वर्ष	मूल्यांकन वर्ष	राशि (रुपयों में)
1.	2016–17	2017–18	1,11,91,925/-
2.	2017–18	2018–19	38,75,100/-
3.	2019–20	2020–21	1,97,64,460/-
4.	2020–21	2021–22	1,57,99,840/-

कृते पवन शुभम एंड कंपनी

सनदी लेखाकार

आईसीएआई फर्म पंजीकरण सं.: 011573सी

(सीए पवन कुमार अग्रवाल)

साझेदार, एम. सं. 092345

स्थान: नई दिल्ली

दिनांक: 28.05.2024



राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी

सचिव

कोषाध्यक्ष 2023-24



राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अवाद्धी

31.03.2024 को समाप्त वर्ष का तुलन पत्र

देयताएँ	राशि (रुपयों में)	परिसम्पत्तियाँ (एनएन. बी.एस.1)	राशि (रुपयों में)
पूँजी निधि आदि शेष जग्मा: संचित निधि से हस्तांतरित घटाएँ: वर्ष के दौरान व्यय से अधिक व्यय जग्मा: वित्त वर्ष 2017-18 के लिए अनुप्युक्त घटाएँ: विशिष्ट आविष्ट निधि से हस्तांतरित निधियाँ विशिष्ट आविष्ट निधि आदि शेष जग्मा: वर्ष के दौरान योग घटाएँ: वित्त वर्ष 2017-18 अनुप्युक्त	17,71,39,555 4,87,57,514 (8,36,133) 1,58,39,782 3,04,75,144	अचल परिसम्पत्तियाँ (एनएन. बी.एस.1) आदि शेष वर्ष के दौरान योग वर्ष के दौरान बढ़ता थाता वर्ष के दौरान मूल्यहास निवेश केन्द्र बैंक में सावधि जमा केन्द्र बैंक के साथ एफडीआर पर जमा व्याज	1,41,54,303 63,98,512 (40,000) (23,53,021) 2,03,59,795
बदेवस्ती निधि आदि शेष वर्ष के दौरान प्राप्त राशि	17,11,48,935 3,04,75,144 4,87,57,514	वर्तमान परिसम्पत्तियाँ विविध जमा राशि (एनएन. बी.एस.5) बैंक में नकद शेष राशि (एनएन. बी.एस.2) नकद शेष राशि (उच्चांत खाता)	5,53,756 28,94,043 4,876
वर्तमान देयताएँ राष्ट्रीय मृदा एवं भूमि उपयोग नीति	20,00,000 —	पेशागियाँ पेशागियाँ तथा राक्फिअ. क्षेत्रीय चैटर (एनएन. बी.एस.3) 5,45,524	4,92,255
भा.कृ.अ.प. के स्थानों को श्रेणीकरण के लिए प्रोफार्मा का विकास अर्जित धन (एमएम एविटर) पीएफएमवीई परियोजना विवेद लेनदार तथा अन्य देयताएँ (एनएन. बी.एस.4) वर्तमान आयकर के लिए प्रावधान	5,45,506 5,00,000 43,200 10,15,750 13,88,848	आयकर की प्राप्ति जीएसटी की प्राप्ति 43,200 10,15,750 13,88,848	1,45,91,679 29,52,307
कुल		कुल	34,55,17,235
संदर्भ दिप्पणियों का संदर्भ ते और लेखे का भाग मानें संलग्न सम आकड़ों की हमारी रिपोर्ट के अनुसार कृत प्रबन्ध सुझाव एवं कानूनी सनदी लेखाकार आईसीएआई फर्म पंजीकरण सं.: 011573सी		राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अवाद्धी सचिव कोषाव्यक्ति 21/3/2019 संदर्भ	



संसद
प्रबन्ध कुमार अग्रवाल
साझेदार, एम. सं. 092345
स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 28.05.2024

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी

31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय का लेखा

व्यय	राशि (रुपयों में)	आय	राशि (रुपयों में)
रा.कृ.पि.अ. की गतिविधियों पर हुआ व्यय (अनुबंध आई.इ. 1)	4,41,04,363	हेयर से प्राप्त अनुदान सहयता भा.कृ.अनु.प. द्वारा 15वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस-कोचिं के लिए अनुदान वित्तीय के द्वारा निवेश पर व्याज के द्वारा	62,00,000 20,00,000
मूल्यहस्त के रूप में (अनुबंध बी.एस. 1)	23,53,021	ब्याज, चंदे से प्राप्त राशि, प्रकाशनों तथा रा.कृ.पि.अ. की गतिविधियों के लिए अन्य प्राप्तियां (अनुबंध ई. 2) आय की तुलना में अतिरिक्त व्यय	2,12,68,975 1,45,84,138
कुल	4,64,57,383	कुल	4,64,57,383
आय से अधिक व्यय	24,04,273		
वित्त वर्ष 2022-23 के लिए आयकर वर्तमान आयकर के लिए प्रावधान	49,42,012 13,89,848	पूँजी निधि के हस्तांतरण द्वारा	87,36,133
कुल	87,36,133	कुल	87,36,133

संदर्भ टिप्पणियों का संदर्भ ले और लेखे का भाग मानें।
संलग्न सम आकड़ों की हमारी रिपोर्ट के अनुसार

कृते पृष्ठ शुभम एंड कंपनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई फर्म पंजीकरण सं.: 011573सी

(सीए पृष्ठ शुभम अग्रवाल)
साझेदार, एम. सं. 092345
स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 28.05.2024

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी



कार्यकारी परिषद्

पद	2023	2024
अध्यक्ष	डॉ. हिमांशु पाठक	डॉ. हिमांशु पाठक
तात्कालिक भूतपूर्व अध्यक्ष	डॉ. त्रिलोचन महापात्र	डॉ. त्रिलोचन महापात्र
उपाध्यक्ष	डॉ. अनिल कुमार सिंह	डॉ. के.एम. बुजरबरुआ
अपाध्यक्ष	डॉ. के.एम. बुजरबरुआ	डॉ. पी.के. जोशी
सचिव	प्रो. के.सी. बंसल	डॉ. डब्ल्यू.एस. लाकड़ा
सचिव	डॉ. डब्ल्यू.एस. लाकड़ा	डॉ. अशोक के. सिंह
विदेश सचिव	प्रो. राजीव के. वार्ष्य	प्रो. राजीव के. वार्ष्य
संपादक	डॉ. मालविका दादलानी	डॉ. वी.के. बरनवाल
संपादक	डॉ. वी.के. बरनवाल	डॉ. राकेश कुमार जैन
कोषाध्यक्ष	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
सदस्य	डॉ. एम.एस. चौहान	प्रो. अगेपति एस. राघवेन्द्र
सदस्य	डॉ. एस.के. दत्ता	डॉ. अंजनि कुमार
सदस्य	डॉ. अंजनि कुमार	डॉ. बी. मोहन कुमार
सदस्य	डॉ. बी. मोहन कुमार	प्रो. बिश्वनाथ चक्रवर्ती
सदस्य	डॉ. सुमन के पाण्डे	डॉ. सी.एन. रविशंकर
सदस्य	डॉ. आर.टी. पाटिल	डॉ. देवेन्द्र कुमार यादव
सदस्य	प्रो. ए.आर. ओडिले	डॉ. ई.वी.एस. प्रकाशराव
सदस्य	डॉ. ई. वी. एस. प्रकाशराव	डॉ. सुश्री मीनाक्षी प्रसाद
सदस्य	डॉ. ए.एस. राघवेन्द्र	डॉ. ओम प्रकाश यादव
सदस्य	डॉ. सी.एन. रविशंकर	डॉ. (सुश्री) पी.डी. कमला जायंती
सदस्य	डॉ. (सुश्री) जी. तरुशर्मा	डॉ. आर.टी. पाटिल
सदस्य	डॉ. आलोक के. सिंह	डॉ. सुमन के. पाण्डे
भा.कृ.अनु.प. नामिति	श्री संजय गर्ग	श्री संजय गर्ग

सचिवालय

1. सुश्री दीक्षा गुप्ता, कार्यकारी निदेशक
2. श्री एस के शर्मा, बजट एवं लेखा कार्यकारी
3. सुश्री मीनू तिवारी, मुख्य कार्यक्रम कार्यकारी
4. श्री पी. कृष्णा, कार्यक्रम कार्यकारी
5. डॉ. मनोज कुमार सिंह, संपादकीय प्रबंधक
6. सुश्री रश्मि सिंह, संपादकीय प्रबंधक
7. श्री जय सिंह, कार्यालय प्रबंधन जूनियर कार्यकारी
8. श्री चितेश कौशिक, कंप्यूटर ऑपरेटर
9. श्री बीएल यादव, ड्राइवर सह कार्यालय सहायक
10. श्री कमल सिंह, सामान्य कार्यालय सहायक
11. श्री शिव देव यादव, कार्यालय सहायक

संक्षिप्तियों की सूची

एडीजी	सहायक महानिदेशक
एजीएम	वार्षिक महासभा बैठक
एआई	कृत्रिम बुद्धिमत्ता
एएनजीआरएयू	आचार्य एनजी रंगा कृषि विश्वविद्यालय
एएससी	कृषि विज्ञान कांग्रेस
एएसआरबी	कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल
बीएसएस	विचार मंथन सत्र
सीएमएफआरआई	केंद्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान
सीआरआईजेएएफ	केंद्रीय जूट और संबद्ध रेशा अनुसंधान संस्थान
डेयर	कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग
डीबीटी	जैव प्रौद्योगिकी विभाग
डीडीजी	उप महानिदेशक
डीजी	महानिदेशक
डीएसआई	डिजिटल अनुक्रम जानकारी
ईसी	कार्यकारी परिषद
एफएओ	खाद्य एवं कृषि संगठन
एफ	अध्येता
रा.कृ.वि.अ.	राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी
एफआरए	मत्स्य संसाधन मूल्यांकन
एफआरएस	फेलो ऑफ रॉयल सोसायटी
एफएस	मत्स्य विज्ञान
एफएसएसएआई	भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण
आईएआरआई	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
आईसीएआर	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

आईआईवीआर	भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान
आईआईएसआर	भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
आईआईएमआर	भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान
केवीके	कृषि विज्ञान केन्द्र
एमपीकेवी	महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ
एनएबीआई	राष्ट्रीय कृषि –खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान
एनएएससी	राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर
एनएफएसए	राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम
एनआईएनपी	राष्ट्रीय पशु पोषण और कार्यिकी संस्थान
एनआईएपी	राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी और नीति अनुसंधान संस्थान
एनआईएएसएम	राष्ट्रीय अजैविक प्रतिबल प्रबंधन संस्थान
एनआईआईएसटी	राष्ट्रीय अंतरविषयी विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान
एनजेएससी	रा.कृ.वि.अ. जर्नल स्कोर समिति
एनआरसीजी	राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र
एनआरएम	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन
एनआरआरआई	राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान
एसबीआई	गन्ना प्रजनन संस्थान
एसडीजी	सतत विकास लक्ष्य
वीएनएमकेवी	वसंतराव नायक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ

BLANK

BLANK

76.	शक्तिवालित भारतीय कृषि के लिए जैवईंधन	2015
77.	भारत में जलवायन प्रमाणीकरण मानदंड एवं कार्यान्वयन ऊर्जा	2015
78.	भारत में जलवायन मार्गिक्यकी विकास : प्रबंधन एवं नीतिगत विकल्प	2016
79.	छोटे किसानों के लिए शोधीय एवं संगीय फसलों की खेती का एकीकरण एवं मूल्य श्रृंखला एवं प्रबंधन	2016
80.	ग्रामीण भारत में चारों बढ़ाना : नीतिगत मुद्रदे एवं कार्यनीतियां	2016
81.	जलवायन् समुदायनशील पशुधन उत्पादन	2016
82.	भारत में गोपशुओं एवं भैंसों के लिए प्रजनन नीति	2016
83.	वर्तमान संदर्भ में ज्ञान खेती से संबंधित मुद्रदे एवं चुनौतियां और इसकी प्रासंगिकता	2016
84.	फार्म उपकरण एवं मरीनरी में परिशुद्धता के लिए व्यावहारिक एवं बहनीय युक्तियां	2016
85.	भारत में हाइड्रोपोनिक चारा उत्पादन	2017
86.	कृषि में नीतियां एवं विकास क्षमताओं के बीच विरोधाभास	2017
87.	सूखा, खाद्य एवं ओलाईट सहित अंजीक प्रतिवल प्रबंधन	2017
88.	जल अपरदन के कारण होने वाले भूमि अपघटन से निपटना	2017
89.	लम्बवत खेती	2019
90.	शून्य बजट की प्राकृतिक खेती – अंधविश्वास या यथार्थ	2019
91.	ऋण माफ करना, बापाम आय को सहायता देने वाली योजनाएँ : चुनौतियां एवं भावी दिशा	2019
92.	किसे की खेती के प्रभावित करने वाला उत्तराधिकारीय मुरझान-4 रोग	2019
93.	कृषि अनुसंधान संस्थानों में विज्ञान संस्कृति अभियुद्धि	2020
94.	कृषि में पारिस्थितिक प्रणाली सेवाओं के लिए भूगतान	2020
95.	खाद्य वाहित प्राप्तिकर्जा रोग	2020
96.	कृत्रिम गमधान के माध्यम से पशुधन सुधार	2020
97.	गैर-गोपशु दूध की क्षमता	2021
98.	पाच ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लिए कृषि एवं खाद्य नीति	2021
99.	भारत के पुनर्निर्माण हेतु नई कृषि शिक्षा नीति	2021
100.	खाद्य सुरक्षा एवं जलवायन गतिविधि के लिए कृषि एवं खाद्य नीतियां	2021
101.	कृषि में विज्ञान आकड़ा विश्लेषण विज्ञान	2021
102.	विश्व व्यापार संगठन तथा भारतीय कृषि की चिंताएं व संभावित समाधान	2021
103.	प्रतिसूक्ष्मजीविक प्रतिरोध	2022
104.	एक विश्व, एक रवास्य	2022
105.	टिकाऊ ईंधन इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम के लिए गन्ना-आधारित इथेनॉल उत्पादन	2022
106.	नगरीय तथा परिनामीय कृषि में अवशिष्टों का उपयोग	2022
107.	प्रबंधन के लिए कलोन द्वारा प्रवर्धित फल फसलों की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का प्रमाणीकरण	2022
108.	भारत में कृषि स्टार्टअप : अवसर, चुनौतियां एवं भावी दिशा	2022
109.	भारतीय पशुधन एवं कूकर्कट में सीमा पाल संकामक रोगों से बचाव के लिए आपातकालीन तैयारी	2022
110.	भारत में टिकाऊ वायोलॉटाइंस रेशम पालन के प्रबंधन के लिए कार्यनीतियां एवं युक्तियां	2022
111.	खाद्य कौटिंग एवं भावी दिशा	2022
112.	कृषि में विस्तार पर आधारित लिंग एवं पोषण	2022
113.	भारतीय कृषि के रूपांतरण के लिए संविदा खेती	2022
114.	कदम्ब उत्पादन का प्रबंधन, मूल्यवान एवं उपयोग	2022
115.	कंकारा से संपर्क-पशु खाद्य के रूप में खाद्य करे का उपयोग और भावी स्थिति	2022
116.	भारत में लदलन क्रौतों को टिकाऊ बनाना : प्रौद्योगिकी तथा नीतिगत उपाय	2022
117.	भारत में 26 मिलियन हेक्टर अधिकतर भूमि के पुनरोद्धार के लिए भावी कार्य योजना	2022
118.	गुणवत्तापूर्ण चारा उत्पादन के लिए जलामीलता	2022
119.	हिन्दीयक कृषि-चुनौतियां एवं अवसर एवं भावी दिशा	2023
120.	नवोन्मेषी कृषि विस्तार मौद्रिकों का अनुकूलन	2023
121.	खाद्य तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता	2023
122.	मूल्य सहायता एवं अनुदान से प्रेरणा	2023
123.	पशुधन (पशु स्वास्थ्य और डेरो/कूकर्कट पालन/मांस/चारा उद्योग) पर कोविड 19 का प्रभाव	2023
124.	भारत में सार्वजनिक-नियंत्रित साक्षरता	2024
125.	भारतीय मत्स्यविकास क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा कार्यनीतियां	2024

स्थिति / कार्यनीति पत्र

1.	राष्ट्रीय कृषि के अनुसंधान प्रणाली (रा.कृ.वि.आ.) में समाज विज्ञानों की भूमिका	2015
2.	भारत में लदलनों में आत्मनिर्भरता	2016
3.	भारतीय कृषि के रूपांतरण एवं किसान कल्याण को उन्नत बनाने के लिए कार्यनीति	2016
4.	भारत में सोयाबीन उत्पादकता एवं उत्पादन को टिकाऊ बनाना	2017
5.	कृषि विस्तार अनुसंधान एवं विकास का सबसीकरण	2017
6.	पोटेशियम के स्रोत के रूप में ग्लासोकोनाइट खनिज के उपयोग पर कार्यनीति	2017
7.	भारत में वानस्पति तेल अर्थव्यवस्था एवं उत्पादन संबंधी समस्याएं	2017
8.	दिल्ला और नवोन्मेषी के लिए संरक्षण कार्यनीतियां	2018
9.	भारतीय फार्म उत्पादकता बढ़ाने के लिए बीज प्रादानीकरण प्रणालियों में तेजी लाना – एक कार्यनीतिपरक दृष्टिकोण	2018
10.	पुनर्नव्य ऊर्जा : कृषि में वृद्धि लिए एवं नया आयाम	2018
11.	रोमंटी झूमधान में दीधन उत्पादन में सुधार	2019
12.	भारत में एक तथा एक दूध की पूर्ण क्षमता का उपयोग : अद्यतन स्थिति	2019
13.	नई उर्वरक सामग्री के विकास एवं अनुकूलन	2019
14.	आत्म-श्रीजीत्वानं में नवोन्मेष	2021
15.	बायोफार्मिंग के लिए पराजीनी कूकर्कट की क्षमता	2022
16.	प्रसंकरण लेते उपयोक्ता टमाटरों के प्रबंधन की आवश्यकता	2022
17.	भारत में कूकर्कट से निपटने के लिए बायोफार्मिंगकशन-वर्तमान स्थिति और भावी दिशा	2022
18.	उन्नत फार्म मरीनरी के माध्यम से कृषि में क्रमी लाना	2022

नीति संबंधी संक्षिप्त पत्र

1.	खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा और किसानों की आय में सुधार के लिए जीई प्रौद्योगिकी के उपयोग में तेजी लाना	2016
2.	कम्बिन एवं टेबी सीडर एवं युक्त मासा प्रबंधन प्रणाली के अनवरत उपयोग के माध्यम से चावल-गौहू फसल प्रणाली में चावल की फसल के अपशिष्ट या पराजीनी का लेहन उत्पादन की समस्या का नवीन वैज्ञानिक ढल	2017
3.	मूद्रा रवास्य : कृषि नीति परिप्रेक्षण में दीधन उत्पादन में सुधार	2018
4.	भारत में 42 तथा 42 दूध की पूर्ण क्षमता का उपयोग : अद्यतन स्थिति	2019
5.	नई उर्वरक सामग्री के विकास एवं अनुकूलन	2019
6.	आत्म-श्रीजीत्वानं में नवोन्मेष	2022
7.	प्रोटीनिक कृषि-चुनौतियां एवं अवसर एवं भावी दिशा	2022
8.	भारत में कूकर्कट से निपटने के लिए बायोफार्मिंगकशन-वर्तमान स्थिति और भावी दिशा	2022
9.	उर्वरक अनुदान के प्रव्यक्ष लाना हास्तांतरण नीति परिप्रेक्षण	2020
10.	भारत में टिकाऊ खाद्य सुरक्षा का विनियम	2020
11.	जैवविधित अधिनियम 2022 में संशोधन की ओर	2021
12.	वैज्ञानिक झूमा सुधारक की सीमाएँ तथा भावी दिशा	2022
13.	आनुवंशिक रूप से रूपांतरण (जीएम) खाद्य पर्याप्ति तथा अप्राप्यकृत जीएम खाद्य घटनाओं का पता लगाने के लिए विनियम	2022

नीतिगत मुद्दों पर रा.कृ.वि.अ. दस्तावेज*

1.	राष्ट्रीय जल नीति पर कृषि वैज्ञानिकों की तैयारी	1995
2.	उर्वरक नीति मुद्दे (2000–2025)	1997
3.	पूर्वी क्षेत्रों में कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए जल संसाधनों का उपयोग एवं प्रबंधन	1998
4.	कृषि जैवविविधता का संरक्षण, प्रबंधन और उपयोग	1998
5.	टिकाऊ कृषि नीतियां	1999
6.	भारत में कृषि शिक्षा के अभिमुख्यन की लैंडग्रांट प्रणाली	1999
7.	मानव पोषण के लिए कृषि का विविधीकरण	2001
8.	पोषणिक सुरक्षा के लिए टिकाऊ मास्टिस्यकी एवं जलजंतुपालन	2001
9.	उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में कृषि अनुसंधान एवं विकास	2001
10.	कृषि का वैश्वीकरण: भारत में अनुसंधान एवं विकास	2001
11.	कृषि में नहिलाओं का सारांशिकरण	2001
12.	विश्व व्यापार संगठन का स्वच्छता एवं पादप स्वच्छता समझौता – भारत के लिए लाभ	2001
13.	भारत में उच्च तकनीकी बागवानी	2001
14.	पश्चिमन सरक्षण और आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन	2001
15.	कृषि अनुसंधान का प्राथमिकीकरण	2001
16.	कृषि-उद्योग अंतर्राष्ट्र, मूल्यवर्धित फार्म उत्पाद	2002
17.	कृषि अनुसंधान संगठनों में सुशासन पर वैज्ञानिकों के विचार	2002
18.	कृषि नीति : इसके लिए प्राप्त करने के लिए अनुसंधान एवं विकास का पुनः डिजाइनीकरण	2002
19.	कृषि में वैद्विक सम्पदा अधिकार	2003
20.	अनाज की अधिकता और व्यापक वैश्विक भूमि की विडंबना	2003
21.	मास्टिस्यकी जैवविविधियों के अनुसंधान प्राथमिकताएं और मानव संसाधन विकास	2003
22.	समुद्री खरपतवार की खेती और उसका उपयोग	2003
23.	डेरी उत्पादों की नीतियां क्षमता	2003
24.	पराजीनी बावल की जैवसुरक्षा	2003
25.	रोजगार अभियुक्त कृषि शिक्षा पर हितधारकों की धारणाएं	2004
26.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में सब्जियों की परिनगरीय खेती	2004
27.	कृषि में आपदा प्रबंधन	2004
28.	मास्टिस्यकी पर नदी थारे को जोड़ने का प्रभाव	2004
29.	भारत में पराजीनी फसलों के वाणिज्यिकरण से संबंधित जैवसुरक्षा संबंधी मुद्दे	2004
30.	जैविक खेती : भारतीय कृषि के संदर्भ में दृष्टिकोण एवं संभावनाएं	2004
31.	परिवर्तित हुए परिदृश्य में कृषि शिक्षा एवं विस्तार प्रणाली की पुनः परिभाषित करना	2005
32.	जल प्रबंधन में उभरते हुए मुद्दे – स्थानित कारण	2005
33.	कारगर नाइट्रोजन उत्पादन के लिए नीतियां विकल्प	2005
34.	कृषि एवं सम्बद्ध विषयों में भारतीय जरनलों और व्यावसायिक वैज्ञानिकों की गुणवत्ता सुधारने के लिए दिशानिर्देश	2006
35.	उर्वरकों की निम्न तथा कम होती हुई फसल अनुक्रिया	2006
36.	फसल प्राप्तियों के संदर्भ में भूसतह के नियम जैवविविधिता	2006
37.	प्राथमिक मूल्यवर्धन पर बल देते हुए प्रौद्योगिकीय दृष्टिकोणों के माध्यम से फार्म एवं फार्म इतर क्षेत्रों में रोजगार के अवसर	2006
38.	विश्व व्यापार संगठन और भारतीय कृषि : नीति तथा अनुसंधान व विकास पर प्रभाव	2006
39.	ग्रामीण संस्थाओं में नवोन्मेष : कृषि समृद्धि की संचालक	2007
40.	भारत में उच्च मूल्य की कृषि : संभावनाएं एवं नीतियां	2008
41.	ग्रामीण भारत के लिए टिकाऊ ऊर्जा	2008
42.	फसल अनुक्रिया एवं पोषक तत्त्व अधिकार	2009
43.	खाद एवं नदा प्रति जैविक – मानव एवं पशु स्वास्थ्य के प्रति घोर संकट	2010
44.	रोगों व कीट पीड़ितों के प्रकोपों की दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय संगरोध कार्यनीतियों सहित पादप संगरोध	2010
45.	कृषिरसायन प्रबंधन संबंधी मुद्दे एवं कार्यनीतियां	2010
46.	पशुचिकित्सा टीके एवं नेत्रानिकी	2010
47.	उत्तर-परिचमी द्विमालयों में सुरक्षित खेती	2010
48.	भारत की अल्लीय मुद्राओं एवं उपयोग में न आई क्षमता का दोहन	2010
49.	कृषि अपरिशेष प्रबंधन	2010
50.	सुखे के लिए तैयारी एवं उनसे निपटना	2011
51.	भारतीय कृषि की बहन क्षमता	2011
52.	भारत में जीएम खाद्य फसलों के लिए जैवसुरक्षा संबंधी आश्वासन	2011
53.	प्रग्रहण मास्टिस्यकी एवं जलजंतुपालन में पायावरणीय लेबलीकरण एवं प्रमाणीकरण	2012
54.	फोर्टफाइल खाद्य पदार्थों में मोटे अनाजों का समेकन	2012
55.	बाल कृपाषण से संधर्ष	2012
56.	समेकित मूदा प्रबंधन के माध्यम से टिकाऊ कृषि उत्पादकता	2012
57.	मूल्यवर्धित उर्वरक एवं श्वल विषिष्ट पोषकतत्व प्रबंधन	2012
58.	संरक्षण कृषि के संदर्भ में फसल अपारिष्टों का प्रबंधन	2012
59.	पश्चिम उत्तरवर्ती और उसका प्रबंधन	2013
60.	पूर्वी भारत के बाढ़ प्रभावित तथा सूखा प्रवण क्षेत्रों की जल उपयोग क्षमता	2013
61.	डेरी पशुओं में मदवक प्रबंधन	2013
62.	जैव पीड़िकनामी गणना संबंधी आश्वासन	2014
63.	कृषि में नैनोप्रैद्योगिकी : संभावना एवं वर्तमान प्रासंगिकता	2014
64.	चावल की खेती के बाद परती भूमि की उत्पादकता में सुधार	2014
65.	भारत में जलवायु समुदायनील कृषि	2014
66.	भारत की पोषणिक सुरक्षा में मोटे अनाजों की भूमिका	2014
67.	नगरीय एवं परिनगरीय कृषि	2014
68.	फार्मोरस का कारण उपयोग	2014
69.	भारतीय कृषि में कार्बन की आर्थिकी	2014
70.	भारतीय कृषि में क्षमता निर्माण के लिए एमओओसी : अवसर एवं चुनौतियां	2014
71.	कृषि उत्पादकता में जड़ अंतः पादपों की भूमिका	2014
72.	कृषि में जैव सुरक्षा विज्ञान : भारी दिशा	2014
73.	विकास हेतु कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार की निगरानी एवं मूल्यांकन (एआरईई4डी)	2015
74.	जैवजलनिकारी : जलभराव से निपटने के लिए एक पर्यावरण मित्र युक्ति	2015
75.	भारतीय कृषि में समग्र वृद्धि के लिए किसानों को बाजार के साथ जोड़ना	2015

*For details visit web site: <http://naas.org.in>